



कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

अष्टांगयोगादेव तु आत्मशुद्धिः

राष्ट्रधर्म व मानवता के सबल रक्षक-
वेद, यज्ञ-योग-साधना केन्द्र आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़ की मासिक पत्रिका

अप्रैल 2016

मूल्य 15 रु.

आत्म-शुद्धि-पथ

मासिक

आत्मशुद्धि आश्रम में बृहद् यज्ञ एवं ध्यान योग शिविर सम्पन्न



चैत्र शुक्ल प्रतिपदा विक्रमी सम्बत् (वैदिक नववर्ष 2073)

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य समाज के
संस्थापक,
वेदों के उद्धारक
महर्षि दयानन्द सरस्वती



आत्मशुद्धि आश्रम
संस्थापक कर्मयोगी
पूज्य श्री आत्मस्वामी
जी महाराज



आत्मशुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य बनें

1. **कर्नल राजेन्द्र सिंह सहरावत**, सैक्टर-6, बहादुरगढ़, आर्यत्व के पोषक एवं वैदिक संस्कृति के उत्थान में निरन्तर सक्रिय हैं। आप आर्य समाज सैक्टर-6 के प्रधान और आत्मशुद्धि आश्रम के विशेष सहयोगी हैं। आप यज्ञ प्रेमी, दानवीर, स्वाध्यायशील वैदिक साहित्य के वितरण में विशेष अभिरूचि रखते हैं। लोगों में आर्यत्व की भावना कैसे विकसित हो इसके लिए आप निरन्तर चिन्तनशील रहते हुए सक्रिय भूमिका निभाते हैं।



आप सेना में कर्नल जैसे सम्माननीय पद पर देशभक्ति पूर्वक सेवा देने के बाद सामाजिक उत्थान के कार्यों में संलग्न हैं। आपको अपनी धर्मपत्नी श्रीमती सावित्री देवी (सेवानिवृत्त मुख्य आध्यापिका) का सामाजिक कार्यों में निरन्तर सहयोग मिलता रहता है। आपकी एक योग्य पुत्री डाक्टर और एक योग्य बेटा इंजीनियर (टाटा कम्पनी में कार्यरत) हैं। आत्मशुद्धि आश्रम परिवार आपके एवम् आपके परिवार के सुस्वास्थ्य, शान्ति एवं समृद्धि की मंगल कामना करता है।

2. **श्री रविकुमार आर्य** प्रबन्ध निदेशक अंजनी प्रोपर्टीज प्रा. लिमिटेड हुड्डा मार्किट बहादुरगढ़, जिला झज्जर एक होनहार आर्य युवक हैं। आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ एवं अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम फर्रुखनगर, गुड़गांव के आप विशेष सहयोगी रहें हैं। समय-समय पर आश्रम को दान देकर वैदिक संस्कृति को पल्लवित करने का आपने सद्प्रयास किया है। आप सहज, सरल, दानवीर, सच्चारित्र एवं प्रामाणिक व्यक्तित्व के धनी हैं। आत्मशुद्धि आश्रम परिवार, आपके एवं आपके परिवार की मंगल कामना करता हुआ, सुख शान्ति, समृद्धि तथा सुदीर्घायुष्य की मंगल कामना करता है।



- राजहंस मैत्रेय आचार्य

प्रिय बन्धुओं! मास अप्रैल में अधिक से अधिक संरक्षक सदस्य एवं आजीवन सदस्य बनकर आगामी मई अंक को अपने चित्र व नाम से पत्रिका को सुशोभित करें। सभी सदस्यों से निवेदन है कि वार्षिक शुल्क (मनीऑर्डर/ड्राफ्ट) द्वारा शीघ्र भेजें अथवा इलाहाबाद बैंक कोड संख्या IFSC-A0211948 में खाता संख्या 20481973039 में सीधे जमा कर सकते हैं। जिससे पत्रिका आपके पास निरन्तर पहुँचती रहे।

- व्यवस्थापक

॥ ओ३म् ॥



आत्म-शुद्धि-पथ (मासिक)

चैत्र-वैशाख

सम्वत् 2073

अप्रैल 2016

सृष्टि सं. 1972949117

दयानन्दाब्द 193

वर्ष-15) संस्थापक-स्वर्गीय पूज्य श्री आत्मस्वामी जी

(अंक-4

(वर्ष 46 अंक 4)

प्रधान सम्पादक

स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी'

मो. 9416054195, 9728236507

आचार्य राजहंस मैत्रेय, मो. 9813754084



सह सम्पादक:

आचार्य विक्रम देव (मो. 9896578062)



परामर्श दाता: गजानन्द आर्य



कार्यालय प्रबन्धक

आचार्य रवि शास्त्री

(8529075021)



उपकार्यालय प्रबन्धक

ईशमुनि (9991251275, 9812640989)

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम
खेड़ा खुरमपुर रोड, फरुखनगर, गुडगांव (हरि.)



व्यवस्थापक: चन्द्रभान चौधरी



सदस्यता शुल्क

संरक्षक	: 7100 रुपये
आजीवन	: 1500 रुपये (15 वर्ष के लिए)
पंचवार्षिक	: 700 रुपये
वार्षिक	: 150 रुपये
एक प्रति	: 15 रुपये

विदेश में

वार्षिक : 20 डालर आजीवन : 350 डालर .

कार्यालय : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

जिला-झज्जर (हरियाणा) पिन-124507

दूर. : 01276-230195 चल. : 9416054195

E-mail : atamsudhi@gmail.com,
rajhansmaitreya@gmail.com

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ सं.
आश्रम समाचार	4
विविध समाचार	5
वेद सन्देश	6
सम्पादकीय : विवेक जागरण दुःखों से छूटने का उपाय	7
श्राद्ध बनाम पितृ यज्ञ-श्राद्ध प्रतिदिन करना चाहिए	8
शरीर वाणी व मन का परिपाक	9
आर्य समाज और वेद प्रचार	13
मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी का जीवन चरित्र	15
पं. गुरुदत्त विद्यार्थी का विलक्षण व्यक्तित्व	18
साधक बुद्धि और विवेक का उपयोग करे	21
पेचिस (प्रवाहिका)	24
स्वास्थ्य चालीसा	26
हंसो और हंसाओ	27
ईर्ष्या	27
मैं कौन हूँ?/श्रद्धा व विवेक में विवाद	28
आर्य समाज नाम का विश्लेषण	29
लाजवाब है दयानन्द	30
देश का 13वां राज्य उत्तर प्रदेश (भाग-2)	31
वाणी का सदुपयोग	32
दान सूची	33

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	5,100 रुपये
अंदर का कवर पृष्ठ	3,100 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	2,100 रुपये
आधा पृष्ठ	1,100 रुपये
चतुर्थ भाग	600 रुपये

समस्त सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। 'आत्मशुद्धिपथ' में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्यायक्षेत्र बहादुरगढ़, जि. झज्जर होगा।

आत्मशुद्धि आश्रम का बृहद्-यज्ञ एवं ध्यान-योग विज्ञान शिविर सम्पन्न

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी आपके प्रिय आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ में स्वामी धर्ममुनि जी के ब्रह्मत्व में 28 मार्च से 3 अप्रैल 2016 तक अथर्ववेदीय बृहद् यज्ञ एवं निःशुल्क ध्यान-योग विज्ञान शिविर श्रद्धा और उत्साह से सम्पन्न हुआ जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने लाभ उठाया।

बृहद्-यज्ञ एवं शिविर का उद्घाटन:- स्वामी देवव्रत जी सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक आर्यवीरदल की अध्यक्षता में 28 मार्च सायं 4 बजे अथर्ववेदीय बृहदयज्ञ और योग शिविर प्रारम्भ हुआ शिविर का उद्घाटन श्री वीरेन्द्र जी आर्य दौलताबाद गुडगांव के कर कमलों द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर हुआ। इस अवसर पर स्वामी धर्ममुनि जी के ब्रह्मत्व में बृहदयज्ञ चला जिसमें वेदपाठ ब्रह्मचारी ध्रुवशास्त्री और ब्र. हरिशंकर द्वारा किया गया। स्वामी जी ने यजमान आश्रम ट्रस्ट के उप्रधान श्री कन्हैयालाल जी आर्य सपत्नीक गुडगांव का परिचय देते हुए सामूहिक रूप से आशीर्वाद दिलाया। मुख्य अतिथि श्री नरेश जी लाकड़ा रहे। इसके बाद श्रीमती चन्द्रकला, आश्रम ट्रस्ट प्रधान श्री सत्यानन्दजी आर्य, महात्मा विश्वमुनि जी, ब्र. ध्रुव शास्त्री ने सुमधुर भजन गाकर सभी को गद्गद किया। श्री कन्हैयालाल जी आर्य, आचार्य चांदसिंह जी ने प्रेरणादायक प्रभावशाली उद्बोधन दिया। सभा अध्यक्ष स्वामी देवव्रत जी ने योग विषयक साधकों को सुन्दर उपदेश दिया। मंच का संचालन श्री राजवीर जी आर्य ने कुशलतापूर्वक किया।

प्रतिदिन प्रातः 5 बजे से 6 बजे तक स्वामी देवव्रत जी योग ध्यान का प्रशिक्षण कुशलता पूर्वक देते रहे। 6 बजे से 7 बजे तक योगनिष्ठ सत्यपाल जी वत्स ने आसन प्राणायाम का अभ्यास कराया। 7.30 बजे से 10 बजे तक और मध्याह्नोपरान्त 3 बजे से 5 बजे तक स्वामी धर्ममुनि जी के ब्रह्मत्व में अथर्ववेदीय बृहद् यज्ञ प्रातः सायं चलता रहा। जिसमें पुरुषार्थ मुनि, श्री गणेशदास गरिमा गोयल दिल्ली, श्रीमती सरला खरबन्दा, श्रीमती लक्ष्मी पाहुजा, श्रीमती दर्शन सुखेजा, श्रीमती लक्ष्मी जी, श्रीकृष्ण व श्रीमती कृष्णा रखेजा, श्रीमती सुदेश जी, श्री सतीश सन्दूजा, श्रीमती शोभा महेन्द्र, वानप्रस्था वेदकौर, कर्नल राजेन्द्र जी सहरावत, श्रीमती सावित्री जी, श्री

रामदेवजी, श्री दर्शन मुनि जी, आदि यजमान बनते रहे। इस अवसर पर ब्र. ध्रुव व श्री रामदेव जी आदि के सुन्दर भजनों का कार्यक्रम रहा। स्वामी रामानन्द जी, आचार्य चांदसिंह रवि शास्त्री, आचार्य राजहंस मैत्रेय जी, आचार्य खुशीराम जी, स्वामी देवव्रत जी आदि विद्वानों के प्रातः सायं प्रभावशाली व्याख्यान होते रहे। 11 बजे से 12.30 तक योग दर्शन का स्वाध्याय और शंका समाधान का कार्यक्रम स्वामी देवव्रत जी, व आचार्य राजहंस जी मैत्रेय के सानिध्य में प्रभावशाली ढंग से चलता रहा।

बृहद् यज्ञ की पूर्णाहुति, योग शिविर समापन समारोह:- आश्रम में पिछले 28 मार्च से चल रहे बृहदयज्ञ और योग साधना शिविर का समापन समारोह 3 अप्रैल को उत्साह और हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हो गया। सैकड़ों साधकों ने शारीरिक और आध्यात्मिक लाभ उठाया। स्वामी धर्ममुनि जी के ब्रह्मत्व में बृहद् यज्ञ की पूर्णाहुति सम्पन्न हुई। वेदपाठ ब्र. ध्रुव शास्त्री द्वारा किया गया। मुख्य यजमान श्री पुरुषार्थ मुनि, श्रीमती राजमाता रही। यज्ञ की पूर्णाहुति के बाद स्वामी जी ने यजमानों का परिचय देते हुए सामूहिक रूप से आशीर्वाद दिलाया। इस अवसर पर आश्रम ट्रस्ट के प्रधान श्री सत्यानन्द जी आर्य, वान. पुरुषार्थ मुनि जी, श्री ओमप्रकाश जी सोहना, पं. जयभगवान जी, पं. रमेश चन्द्र

जी कौशिक झज्जर, श्री सुखपाल जी आर्य व संगीताचार्य लक्ष्मणानन्द जी आदि ने सुन्दर भजनों का कार्यक्रम रखा। इसके बाद योगनिष्ठ सत्यपाल जी वत्स, स्वामी रामानन्द जी, आचार्य चांदसिंह जी, स्वामी देवव्रत जी आदि विद्वानों ने ध्यान-योग, ईश्वर भक्ति, विषयक ओजस्वी, प्रेरणादायक व्याख्यान दिये। स्वामी धर्ममुनि जी मुख्याधिष्ठाता आश्रम ने सभी को शुभाशीष देते हुए आश्रम द्वारा संचालित विविध सेवा कार्यों का परिचय देते हुए सभी संन्यासियों, विद्वानों, दानियों, कार्यकर्ताओं और साधक साधिकाओं का हार्दिक धन्यवाद किया। मंच संचालन का कार्य श्री राजवीर जी आर्य ने बड़ी कुशलता के साथ किया। कार्यक्रम के संयोजक वानप्रस्थी ईशमुनि जी रहे। भोजन तथा अन्य व्यवस्था आचार्य विक्रम देव शास्त्री व ब्र. कर्ण आर्य द्वारा सुन्दर ढंग से की गयी।

आर्या माता राजरानी दिवंगत

श्रीमती राजरानी चड्ढा एफ/32 राजौरी गार्डन, नई दिल्ली 29 जनवरी 2016 को अपने पार्थिव शरीर को छोड़कर चली गयी। वे अपने पीछे पुत्र पौत्रों से भरा पूरा खुशहाल परिवार छोड़कर गयी हैं। वे वैदिक संस्कृति से ओतप्रोत, यज्ञप्रिय, धार्मिक, दानशीला, समाज सेवी, स्वाध्यायशील एवं आर्य समाज की सक्रिय कार्यकर्ता रहीं। दैनिक यज्ञ करते हुए वेदों के स्वाध्याय में निरन्तर लगी रहती। आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ का लम्बे समय से निरन्तर सहयोग करती रही। स्वयं दानशील होते हुये अन्य लोगों से दान एकत्रित करके आश्रम को प्रदान करती रही।

आपका जीवन बड़ा ही धार्मिक एवं सादगी से भरा हुआ था आपका पवित्र जीवन परिवार समाज के लिए निरन्तर प्रेरणा श्रोत रहेगा। आत्मशुद्धि परिवार अपने सभी प्रकल्पों की ओर से उस दिवंगत आत्मा की सद्गति एवं परिवार जनों के लिए शक्ति बल की मंगल कामना करता है। जिससे परिवारी जन आपने पूज्या मां के पग चिह्नों पर चलते हुए उन्नति भी ओर अग्रसर हों।

शोक संदेश



कवि कृष्ण 'सौमित्र' साहित्यालंकार बड़े दुःख के साथ सूचित करते हैं कि स्वयं की सहधर्मिणी श्रीमती सुमित्रा शर्मा का दिनांक 13.03.2016 को निधन हो गया। आप बड़ी धार्मिक सरल

स्वभाव की थी। वे सेवा भावना से ओतप्रोत रही।

आप अपने पीछे भरा-पूरा खुशहाल परिवार छोड़कर गई हैं। आत्मशुद्धि आश्रम परिवार दिवंगत आत्मा की सद्गति एवं परिवार को दुःख सहन करने की शक्ति की ईश्वर से प्रार्थना करता है।

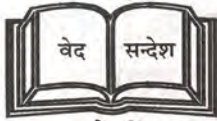
- विक्रम देव शास्त्री

फरुखनगर आश्रम का यज्ञ व मासिक सत्संग सम्पन्न

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम फरुखनगर गुड़गांव का मासिक सत्संग दिनांक शनिवार 12 मार्च 2016 को उत्साह और श्रद्धा के साथ सम्पन्न हो गया। सायं 4 बजे विक्रम देव शास्त्रीजी द्वारा यज्ञ सम्पन्न कराया गया। विभिन्न यजमानों ने श्रद्धापूर्वक आहुतियां प्रदान की। तत् पश्चात् सुमधुर भजनो का कार्यक्रम चला। स्वामी धर्ममुनि जी ने सभी विचारों का उपसंहार करते हुए आचमन के मंत्रों पर सरलता से प्रकाश डाला और निरन्तर सन्मार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा प्रदान की। इस अवसर पर श्री चतुर्भुज बंसल, श्री मोहित, श्री हरपाल जी, एवं विभिन्न स्थानों से आर्य श्रद्धालु उपस्थित रहे। वानप्रस्थी ईशमुनि जी ने सभी का हार्दिक धन्यवाद किया। शान्तिपाठ के बाद प्रसाद वितरण हुआ।

भगवान का प्यारा कौन

अबू बीन अदम अपने कमरे में बैठे कुछ लिख रहे थे कि खिड़की में से अकस्मात बड़ा ही तीव्र प्रकाश अन्दर आया। सारा कमरा आलोकित हो उठा। उन्होंने विस्मय से निगाह उठाकर देखा तो पता चला, एक आकृति कमरे में खड़ी है। अबू बीन अदम ने पूछा, "तुम कौन हो?" आकृति ने कहा, "मैं देवदूत हूँ।" अबू बीन अदम ने प्रश्न किया, "यहाँ कैसे आये हो?" उत्तर मिला, "मुझे ईश्वर ने भेजा है।" "किसलिए?" "उन लोगों की सूची बनाने के लिए, जो ईश्वर की सेवा करते हैं। उन्हें वह आशीर्वाद देंगे।" अबू बीन अदम ने कहा, "मैं तो ईश्वर की सेवा नहीं करता, इंसानों की सेवा करता हूँ।" यह सुनकर देवदूत चला गया। अबू बीन अदम अपने काम में लग गए। अगले दिन देवदूत फिर आया। अबू बीन अदम ने पूछा, "अब तुम कैसे आये हो?" देवदूत ने कहा, "मैं उन लोगों की सूची लाया हूँ जिन्हें ईश्वर ने अपना आशीर्वाद दिया है।" इतना कहकर देवदूत ने वह सूची अबू बीन अदम के सामने रख दी। अबू बीन अदम सूची को देखकर चकित रह गये। उनका नाम सबसे ऊपर था। नीचे मोटे-मोटे अक्षरों में लिखा था "जो इंसानों की सेवा करते हैं, वे मेरी ही सेवा करते हैं।"



दाश्वान् की संपत्ति

- डॉ. रामनाथ वेदालंकार

अग्ने विवस्वदुषसश् चित्रं राधो अमर्त्यं।
आ दाशुषे जातवेदो वहात्वम्, अद्या देवाँ उषर्बुधः॥

ऋग् 1.44.1

ऋषिः प्रस्कण्वः। देवता अग्निः। छन्दः बृहती।
(अमर्त्यं) हे अमर! (जातवेदः) हे सर्वव्यापक,
सर्वज्ञ, सर्वप्रकाशक (अग्ने) अग्रणी, तेजस्वी परमात्मन्!
(त्वम्) तू (दाशुषे) आत्मसमर्पणकर्ता के लिए
(अद्या) आज (उषसः) उषा के (विवस्वत्) तमस्
का विवासन करनेवाले, (चित्रं) अद्भुत (राधः)
ऐश्वर्य को (और) (उषर्बुधः) उषःकाल में उद्बुद्ध
होनेवाले (देवान्) देवों को (आ वह) प्राप्त करा।

बाह्य जगत् में आदित्य रूप जातवेदस् अग्नि
प्राकृतिक उषा के अनुपम प्रकाश को प्रदान करता है।
रात्रि के निविड अन्धकार का विवासन करनेवाली उषा
की ज्योतिरमयी किरणें हमें नवीन स्फूर्ति और उद्बोधन
प्रदान करती है। उषा की बेला हमारे अन्दर पवित्र
विचारों को और अनेक दिव्य गुणों (देवों) को उत्पन्न
करती है।

किन्तु हम जिस उषा के चित्र-विचित्र ऐश्वर्य
की याचना और आतुरता के साथ प्रतीक्षा कर रहे हैं,
वह इस प्राकृतिक उषा से विलक्षण कोई अन्य ही उषा
है। वह है दिव्य अध्यात्म-प्रकाश की उषा। उस उषा
को प्राकृतिक सूर्याग्नि नहीं, किन्तु वह अमर परमात्माग्नि
हमारे हृदयान्तरिक्ष में उदित करती है, जो सर्वव्यापक
है, सर्वज्ञ है, सर्वप्रकाशक है। अध्यात्म उषा का
ऐश्वर्य 'विवस्वत्' है, मोहान्धकार को और तमःप्रियता
को विच्छिन्न करनेवाला है। वह 'चित्र' है, अद्भुत है,
अलौकिक है। वह 'राधस' है, सिद्धि और सफलता
को प्रदान करनेवाला है। अग्नि-प्रभु उषा की दिव्य
ज्योति का धन उसे ही प्रदान करते हैं, जो 'दाश्वान्'
बनकर उन्हें आत्म-समर्पण करता है। जब तक मनुष्य
बाह्य जगत् को आत्म-समर्पण किये रहता है, तब तक
वह बाह्य जगत् से मिलने वाले लाभों या लाभाभासों का
ही अधिकारी होता है। दिव्य उषा के अन्तःप्रकाश का
ऐश्वर्य तो आत्मा को प्रभु में लीन करने पर ही मिलता

है। हे जातवेदा परमात्मन्! आज मैं भी तुम्हें आत्म-दान
देता हूँ। मुझे भी तुम दिव्य उषा का ऐश्वर्य प्रदान करो।

हे अमर अग्निदेव! तुम आज मुझे उषर्बुध देवों
का भी सानिध्य प्राप्त कराओ। दिव्य उषा के प्रकाश से
तमःपुंज के विलीन हो जाने पर समस्त देव 'मैं पहले'
मैं पहले' की रट लगाते हुए मेरे अन्तःकरण में
अवतीर्ण हो जाएँ। वैदिक 'मित्र' देव मैत्री का,
'वरूण' देव पाप-निवारण का, 'सविता' देव शुभ
प्रेरणा का, 'पूषा' देव पुष्टि का, 'विष्णु' देव व्यापकता
एवं उदारता का, 'इन्द्र' देव वीरता का, 'रुद्र' देव
रौद्रता का, 'सोम' देव सौम्यता एवं पवित्रता का,
'पर्जन्य' देव वर्षा का, 'बृहस्पति' देव ज्ञान का,
'त्वष्टा' देव कला-नैपुण्य का, 'प्रजापति' देव प्रजापतित्व
का, 'वायु' देव गतिमयता का, 'अश्विनौ' देव परोपकार
का सन्देश देते हुए हृदय को दिव्य गुणों का धाम बना
दें। हे अग्नि प्रभु! तुम मेरे और देवों के बीच में 'दूत'
बनो, मेरे अध्यात्म-यज्ञ में देवों का आवाहन करो। हे
उषर्बुध देवो! मेरे हृदय में उषा खिल चुकी है, अब तुम
भी उद्बुद्ध होने में विलम्ब न करो।

आश्रम द्वारा प्रकाशित

महत्त्वपूर्ण साहित्य अवश्य पढ़ें

यज्ञ समुच्चय	मूल्य : 50 रु.
वैदिक सूक्तियों पर दृष्टान्त	मूल्य : 25 रु.
स्वस्थ जीवन रहस्य	मूल्य : 20 रु.
फल-सब्जियों द्वारा रोग नष्ट	मूल्य : 20 रु.
आत्मशुद्धि के सरल उपाय	मूल्य : 15 रु.
विद्यार्थियों के लाभ की बातें	मूल्य : 15 रु.
वृहद् जन्मदिवस पद्धति	मूल्य : 20 रु.
चाणक्य-दर्पण	मूल्य : 25 रु.
कल्याण-पथ	मूल्य : 20 रु.
प्राणायाम-विधि	मूल्य : 10 रु.
स्वादिष्ट प्रयोग चतुष्टय	मूल्य : 15 रु.

प्राप्ति स्थान : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़,

जि. झज्जर (हरियाणा) पिन-124507

दूरभाष : 01276-230195 चलभाष : 09416054195

सम्पादकीय



मानव जीवन में सुखों के बीच दुखों का क्रम भी चलता रहता है, जो मानव जीवन के सौन्दर्य में भयानक रोग की तरह लगा हुआ है जिसमें तिल तिल कर व्यक्ति को जलना पड़ता है। पतंजलि मुनि ने योदर्शन में द्रष्टा द्रश्य के संयोग के नाश से दुखों के नाश का वर्णन किया है। तदभावात् संयोगाभावो हानं तद् दृशेः कैवल्यम् ॥ 2.25 ॥ अर्थात्—तद्-अभावात्=उस द्रष्टा द्रश्य के बीच अविद्या, अविवेक के अभाव से संयोगाभावः=संयोग की समाप्ति हानम्=हान है तत्=उस दृशेः=द्रष्टा, आत्मा का कैवल्य=कैवल्य-मुक्ति है। अर्थात् अविद्या के अभाव से संयोग का अभाव हान यानि आत्मा के बंधनों का नाश है। बंधनों का सर्वथा अभाव ही द्रष्टा, आत्मा का मोक्ष है।

विवेकी व्यक्ति अपने बंधनों को समझता है। उनके नाश के लिए यथासंभव उपाय करता है। ज्ञान-योग, कर्म-योग, भक्ति-योग और जप, तप, ध्यान, उपासना आदि बन्धनों से छुटकारा पाने की ही विभिन्न पद्धतियाँ हैं। साधक इनका यथासंभव अनुष्ठान करता हुआ चित्त को निर्मल बनाकर आत्मसाक्षात्कार की ओर उन्मुख होता है। अन्ततः एक दिन साधक आत्मसाक्षात्कार में सफल हो जाता है। प्रकृति पुरुष का भेद दर्शन होने से अविद्या का अभाव हो जाता है और अविद्या के अभाव से संयोग का भी अभाव हो जाता है। संयोग के अभाव का नाम हान है और हान का ही अर्थ है छूटना अर्थात् समस्त दुःख बन्धनों से छूट जाना। अविद्या के कारण साधक स्वयं में ऐसा भ्रमित था कि दृश्य जगत् से मूलतः अलग होने पर भी उससे अपने को अलग नहीं देख पाता था। अब आत्मसाक्षात्कार से वह भ्रम टूट गया। अब दोनों का संयोग भी न रहा। क्योंकि वह तो इस

विवेक जागरण दुखों से छूटने का उपाय

भ्रम का परिणाम था। अब द्रष्टा का दृश्य के साथ कोई सम्पर्क नहीं रहा। तीनों गुणों के साथ न रहकर अब वह निज स्वरूप में अवस्थित रहता है। तीनों गुण के सम्पर्क के कारण ही तीनों तापों से उत्पन्न था। अब वह ताप विलीन हो गया। आचार्य पंचसिख कहते हैं, 'तत्संयोग हेतु विवर्जनात् स्यादयमात्यान्ति को दुःख-प्रतीकारः' अविद्या के कारण प्रकृतिः पुरुष संयोग दुःख का कारण है। विवेक ख्याति हो जाने पर दुःख का कारण संयोग टूट जाता है। तब संसार के सभी प्रकार के दुःखों का आत्यान्तिक (सर्वथा) नाश हो जाता है। विवेक ख्यातिरविप्लवा हानोपायः ॥ 2.26 ॥ अर्थात् विवेक ख्यातिः=प्रकृति-पुरुष का अलग ज्ञान अविप्लवा=सतत रहने वाला हानोपायः=दुःख नाश का उपाय है अर्थात् सांसारिक विषयों से न प्रभावित होने वाला, न डूबने वाला, प्रकृति-पुरुष का विवेक ज्ञान ही हानोपाय अर्थात् दुखों के नाश का उपाय है।

अध्यात्म पथ की एक बड़ी जटिलता यह रही है कि प्रायः साधक वर्ग जिन उपायों को मुक्ति तक पहुँचने में सहायक समझता रहा है वे उपाय और विधियाँ उतनी ही आत्मा का साक्षात्कार करने में बाधक भी रही हैं। जिसका मुख्य कारण है उपाय या विधि की उपयोगिता व गुणवत्ता को न समझना। सच यह है कि कोई भी उपाय, विधि, आत्मा बोध में निमित्त बनती है और यह भी हम पर निर्भर करता है कि विधि या उपाय के सहयोग से आत्म बोध हो या न हो। प्रायः साधक आत्म बोध के साधनों से ही चिपककर रह जाते हैं। यही देखने को मिलता है यदि विधि से ही चिपककर जीते हैं तो आत्म बोध नहीं हो पाता और उपाय क्रिया काण्ड बन कर रह जाता है। जिन साधनों का उपयोग पूर्व ऋषियों ने आत्म बोध के लिए पूर्व कभी किया था। आज वे ही सब क्रियाकाण्ड बनी हुई हैं। इसलिए बहुत समझने की

आवश्यकता है। बिना समझे कोई भी विधि केवल क्रियाकाण्ड ही होगी। यहाँ दुखों के अत्यन्त नाश का उपाय विवेक ख्याति के लगातार बने रहने का निर्देश है। जब हम समाधिस्थ होते हैं तो वहाँ द्रष्टा के समक्ष कोई विषय नहीं होता अर्थात् वह स्वयं को सम्पूर्ण विषयों से पृथक् पाता है। या यों कहिये कि वह स्वयं को ही विषयरूप में पाता है। अर्थात् स्वयं का ही साक्षात्कार करता है। इस अवस्था विशेष में ही मोक्ष है। इसलिए प्रकृति पुरुष का पृथक्-पृथक् ज्ञान ही विवेक ख्याति है।

समाधि के अतिरिक्त साधक जब सामान्य अवस्था में आता है तो चित्त में उपस्थित संस्कार पुनः पुनः आत्मा को प्रभावित करते हैं और आत्मा आकर्षणों से आकर्षित हो जाती है। जब तक आकर्षणों से आकर्षित से रहती है तब तक सुख दुख बने रहते हैं। इसलिए विवेक ख्याति की सतत् अवस्था ही दुख नाश का उपाय है। विवेक ख्याति का अर्थ है कि द्रष्टा आत्मा, का विषयों से

पूर्णतया अलग बने रहना, यह विषयों से निर्लेप अवस्था ही मोक्ष है। यही दुखों के अत्यन्त नाश का उपाय है। यह निर्लेप अवस्था विषयों के समर्थन या विरोध से नहीं आती अपितु जन्म जन्मान्तरों में भोगे गये विषयों से उत्पन्न संस्कारों के प्रति तटस्थता, निर्लेप अवस्था से आती है, और यह भी जब सतत् बनी रहती है तभी विवेक ख्याति अविप्लवा होती है। यह शनैः-शनैः जागरूकता के साथ साधकों द्वारा किये गये सतत अभ्यास से आ जाती है। परन्तु आती उसी की है जो इसी दिशा में संलग्न रहता है अन्यथा नहीं आती। यह अप्लवा विवेक ख्याति केवल शाब्दिक बोध से नहीं आ पाती। कुछ लोग शास्त्र, गुरु के स्वाध्याय सत्संग से निश्चय करके आश्वस्त हो जाते हैं कि अवसर आने पर विवेक ख्याति हो जायेगी यह भ्रम होता है। इसलिए साधक को सचेत सतत प्रयत्नशील होकर स्वयं अनुभव करना होता है। जो स्वयं इन्द्रियों के पार प्रत्यक्ष करता है वही मुक्त हो जाता है।

-राजहंस मैत्रेय

श्राद्ध बनाम पितृ यज्ञ- श्राद्ध प्रतिदिन करना चाहिए

एक दिन की बात है आश्विन मास का पितृ पक्ष चल रहा था। इन दिनों पौराणिक भाई अपने मृतक पूर्वजों की याद में पंडितों को भोजन कराते हैं। प्रातः काल पार्क में कुछ वरिष्ठ लोग श्राद्ध के सम्बन्ध में चर्चा कर रहे थे। मैं भी वहाँ बैठा हुआ था। एक व्यक्ति ने कहा-आर्य समाज तो श्राद्ध के विरुद्ध है। आर्य समाजी श्राद्ध को नहीं मानते। बेशक आर्य जी से पूछ लो। मैंने कहा, हम (आर्य समाजी) श्राद्ध करने के विरुद्ध नहीं हैं। आप तो वर्ष में एक दिन अपने पितरों को याद करते हो। हम कहते हैं कि श्राद्ध प्रतिदिन करना चाहिए। वास्तव में जिसे आप श्राद्ध कहते हो वह पितृ यज्ञ है अर्थात् जीवित माता-पिता एवं गुरुजनों की नित्य प्रति सेवा करना है। श्राद्ध का अर्थ है-श्रद्धा से किया गया सेवा कार्य। श्रद्धा शब्द श्रु+धा से मिलकर बना है। श्रद्धा का अर्थ है जो (श्रु) सत्य को (धा) धारण किए

हुए हैं। अब सच्चाई यह है कि जो वृद्ध जन जीवित आपके सामने हैं उनकी सेवा करके श्राद्ध कर सकते हो। मृतक पूर्वजों का हमें किसी को कुछ नहीं पता कि कहां पर किस पशु पक्षी आदि के शरीर में हैं।

हम देखते हैं कि आज सन्तान जीवित माता-पिता को पानी भी नहीं पिलाती उनके मरने के बाद श्राद्ध का पाखण्ड करके प्रदर्शन करते हैं प्रिय सज्जनों! श्राद्ध करना चाहते हो तो प्रतिदिन जीवित माता-पिता एवं गुरुजनों की सेवा किया करो। उनको समय पर अच्छा भोजन दो। नये साफ-सुथरे वस्त्र दो। उनकी सेवा करके उन्हें तृप्त+प्रसन्न रखो। ये ही सच्चा श्राद्ध है। मनु महाराज कहते हैं जो वृद्ध जनों की नित्य सेवा करते हैं उनकी विद्या, बुद्धि, यश और बल चार चीजें बढ़ती हैं।

- देवराज आर्य मित्र हरि नगर

शरीर वाणी व मन का परिपाक

-आचार्य प्रद्युम्न

जब मनुष्य आँख उठाकर इस संसार को देखता है तो चारों तरफ उसे सभी लोग अपने-अपने काम में व्यस्त दिखाई देते हैं। जानना-मानना व करना ये तीन चीजें मनुष्य में इकट्ठी पराकाष्ठा में रहती हैं, जो मनुष्येतर किसी भी प्राणी में देखने को नहीं मिलेगी। मनुष्य अपनी रूचि-प्रकृति व सामर्थ्य के अनुसार अधिक से अधिक जानना, अधिक से अधिक मानना, अधिक से अधिक करना चाहता है। पर उसके इस जानने, मानने व करने में दिशा निर्धारण कराने वाला अपने स्वयं के संस्कारों के साथ-साथ बाह्य वायुमण्डल, समाज, माता-पिता, गुरु-आचार्य का सान्निध्य व उनके साहित्य का प्रभाव ये सभी निमित्त बनते हैं। यह जानना, मानना व करना शुद्ध भी हो सकता है और अशुद्ध भी। इनके शुद्ध होने से ही सच्चा सुख मिलता है। अशुद्ध ज्ञान, अशुद्ध कर्म व अशुद्ध मान्यताओं का परिणाम अत्यन्त दुःखदायी होता है, और व्यक्ति को उसके वास्तविक लक्ष्य से दूर-दूर ही ले जाता रहता है। अशुद्ध ज्ञान ही अज्ञान है।

मन व इन्द्रियों से व्यक्ति जो कुछ भी अनुभव करता है वह ज्ञान की ओर भी ले जा सकता है और अज्ञान की ओर भी। जैसे व्यक्ति आँखों से कुछ देखता है तो उन विभिन्न दृश्यों के विभिन्न प्रभाव व्यक्ति पर पड़ते रहते हैं। उनमें से कुछ ऐसी चीजें होती हैं जो व्यक्ति में कामभाव को पैदा कर देती हैं, किन्हीं को देखते ही तत्क्षण क्रोध आ जाता है। किन्हीं वस्तुओं, भूमि, भवन वस्त्र पुस्तक या अपने को अच्छे लगने वाले व्यक्तियों को देखकर मन में लोभ आ जाता है कि ये सब हमें प्राप्त हो जायें या इन पर हमारा अधिकार रहे। अपने ऐश्वर्य रूप यौवन विद्या बल, मधुर-कण्ठ अथवा योग्य शिष्य व पुत्र को देखने लगता है तो अहंकार जागरित हो जाता है कि मेरे पास वे चीजें हैं जो दूसरों के पास नहीं हैं। जिन चीजों को व्यक्ति ने अपने परिश्रम से प्राप्त किया है। उन वस्तुओं को तथा स्त्री-पुत्रादि सम्बन्धीजनों व शिष्यों को देखते ही मोह उत्पन्न हो जाता है। प्रतिकूल व्यक्ति या उसके ऐश्वर्य को देखते ही ईर्ष्या पैदा हो जाती है। इसी प्रकार, जिन लोगों ने किसी भी प्रकार का कष्ट दिया है, किसी

सन्दर्भ में अपमान किया, वस्तु चुरा ली, किसी भी रूप में पराजित कर दिया, किसी विषय पर बहस करते समय चुप कर दिया, अपशब्द कहे तो ऐसे व्यक्तियों को देखते ही मन में द्वेषभाव आ जाता है। उन अलग-अलग दृश्यों से जो मन पर प्रभाव पड़ रहा है वह व्यक्ति को अज्ञान की ओर ले जाता रहता है। सन्त-महात्माओं को, सद्ग्रन्थों को, प्रकृति के अपूर्व सौन्दर्य को भी व्यक्ति इन्हीं आँखों से निहारता है, जिनको देखने से ज्ञान की ओर अग्रसर होने में अत्यन्त सहयोग मिलता है।

ये ही सब बातें कानों के साथ जुड़ी हुई हैं। किन्हीं शब्दों से काम, किन्हीं से क्रोध, किन्हीं से लोभ, किन्हीं से मोह, किन्हीं से अहंकार, किन्हीं से ईर्ष्या, किन्हीं से द्वेष जग उठता है। दूसरी तरफ ज्ञानोपलब्धि का अनन्य साधन भी शब्द ही हैं। श्रवण, मनन, निदिध्यासन व साक्षात्कार के क्रम में सबसे प्रथम स्थान श्रवण को ही दिया गया है। इसके बिना मनुष्य पशु ही बना रहता है।

ठीक ऐसा ही व्यक्ति के मन के साथ घटित होता रहता है। मनुष्य के मन में जो विचार उठते हैं उनकी भी दो धाराएं हुआ करती हैं। वे विचार भी दर्शनेन्द्रिय व श्रवणेन्द्रिय की भाँति मनुष्य को ज्ञान तथा अज्ञान की तरफ खींचते रहते हैं। जब भी मन में भौतिक वस्तुओं की स्पृहा, नास्तिकता, अश्रद्धा, द्रोह, काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष सम्बन्धी विचार उठते हैं तो मनुष्य अज्ञान वाली धारा में बहने लगता है। इसके विपरीत जब मन में शान्ति, स्नेह, त्याग, दया-करुणा, मनोभावकायरूप त्रिविधसंयम, धैर्य, क्षमा, श्रद्धा, भक्ति, प्रेम व वैराग्य के भाव आते हैं तो उस समय मनुष्य ज्ञान की धारा के साथ होता है।

बाह्य शब्द या बाह्य रूप से यदि व्यक्ति में अज्ञान अर्थात् काम-क्रोध, लोभादि बढ़ते हैं तो वहाँ से हट जाना चाहिए, या फिर अपनी आँख कान को उस तरफ से बन्द कर लेना चाहिए। क्योंकि मनुष्य के मन में अनन्त जन्मों की प्रक्रिया में जो उस-उस सुख के रागात्मक संस्कार और उस-उस दुःख के द्वेषात्मक संस्कार पड़े हुए हैं वे अनुकूल आलम्बन को पाकर

वैसे ही उदबुद्ध हो जाते हैं जैसे कि भूमि में पड़ा हुआ बीज पानी मिलते ही अंकुरित हो उठता है।

संस्कारों के समूल नाश करने में जुटे हुए साधक को यहीं से अपनी यात्रा का प्रारम्भ करना होता है कि वे संस्कार शरीर व इन्द्रियों को प्रभावित न कर पायें। आलम्बन को पाकर वे संस्कार शरीर व इन्द्रियों के स्तर पर आ जाते हैं और ऐसा होते ही उन संस्कारों की जड़ें और भी अधिक मजबूत हो जाती हैं। ज्ञानपूर्वक अभ्यास के बल से यही किया जाता है कि सड़क पर तेजी से दौड़ती हुई गाड़ी एक क्षण के लिए भी इधर-उधर न भागे अर्थात् जब-जब सड़क से नीचे उतरने लगे तो उसे साधे रखना, नीचे न उतरने देना। संस्कार मन से शरीर पर पहुँच जायें तो समझना चाहिए कि साधना रूपी गाड़ी अपनी पटरी से नीचे उतर गई है। अब कल्पना की जा सकती है कि जब गाड़ी सड़क से नीचे उतर जाती है तो उसके क्या परिणाम हुआ करते हैं? एकक्षण का प्रमाद सर्वनाश में बदल जाता है। असाधारण रूप से जो जागरूक हैं या रहते हैं वे ही इस कठिन व दुर्धर्ष कार्य को कर पाने में समर्थ हो पाते हैं, शेष तो प्रतिदिन टूटते-फूटते रहते हैं, कष्ट पाते रहते हैं, किसी बड़ी दुर्घटना के होने पर कुछ दिन के लिए सावधान हो जाते हैं और फिर वही पूर्व वाला क्रम बार-बार दोहराया जाता है। बस! यही होती है इस सम्पूर्ण जीवन की एक दुःखदायी कहानी।

जीवन में ये जो छोटे-बड़े दुःख रहते हैं, यदि व्यक्ति इनको ध्यान से देखता रहे या अनुभूति करता रहे, साथ में जिन कारणों से ये दुःख प्राप्त हैं उन सब का भी सूक्ष्मता से अवलोकन करता रहे, दुःख से जो परेशानी, कष्ट या बाधा होती है, उसका एक चित्र लेकर अपने पास रख ले और समय-समय पर उसे देखता रहे तो यह दुःख दर्शन ही उस दुःख से सदा-सदा के लिए पीछा छुड़ाने हेतु कोई न कोई उपाय खोजने की ओर प्रवृत्त कर देगा। यह सर्वथा ही असम्भव है कि व्यक्ति दुःखों में जी सके। यह मानव मन इतना अधिक विस्मृतिशील है, जिन-जिन निमित्तों से महान् दुःख उठाया है उनको भी एकदम से भूल जाता है। ये छोटे बच्चे तो अग्नि में एक-बार हाथ जलने देते हैं, यह एक बहुत बड़ी विडम्बना है।

व्यक्ति को अपने जीवन को सर्वतः परिपूर्ण

बनाने के लिए अनेक साधनाएं करनी होती हैं-शरीर की साधना, वाणी की साधना, इन्द्रियों की साधना, मन की साधना, बुद्धि की साधना व व्यवहार की साधना इत्यादि। साधना शब्द का मूलधात्वर्थ है-‘साध संसिद्धौ। किसी चीज को अच्छी प्रकार सिद्ध करना अर्थात् पकाना। पकाने का अर्थ है किसी भी चीज के कच्चेपन को हटाने के लिए अपेक्षित पुरुषार्थ करना। जब तक कोई भी वस्तु कच्ची होती है उसमें रस नहीं भरता। रस की निष्पत्ति वस्तु के पक जाने पर ही होती है। सो जब तक शरीर, वाणी, इन्द्रियाँ, मन, बुद्धि व व्यवहार में कच्चापन रहता है, जीवन रस से शून्य ही रहता है।

किसी व्यक्ति के शरीरादि अभी कच्चे हैं या पक गए हैं-इस बात को अनेक प्रकार से जांचा, परखा व आंका जा सकता है। शरीर में आलस्य या भारीपन का होना, स्फूर्ति का न होना, रोगों से शीघ्र प्रभावित हो जाना, बल का न्यून होना इत्यादि अपरिपक्व शरीर के लक्षण हैं। कठोरता, मिथ्यात्व, व्यर्थ, वार्ता, दोष चर्चा, जहां धीमे बोलने से ही काम चल रहा हो-वहाँ ऊँची व तेज आवाज में बोलना इत्यादि को वाणी का कच्चापन जाना व माना जा सकता है। विचारों का अमर्यादित व अनियंत्रित रूप से आना-जाना, माना जा सकता है। विचारों का अमर्यादित व अनियंत्रित रूप से आना-जाना, असंवेदनशीलता, भूतकालिक स्मृतियों में खोए रहना, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष, द्रोह, समता का अभाव, भीड़ का अच्छा लगना व एकान्त अच्छा न लगना, नास्तिकता, अश्रद्धा, ज्ञान में अरुचि, जड़ के प्रति आकर्षण इत्यादि मन की अपरिपक्वता के चिन्ह हैं। बुद्धि की अपरिपक्वता के फलस्वरूप व्यक्ति कर्तव्य-अकर्तव्य का निश्चय नहीं कर पाता, अनेकानेक संशयों से घिरा रहता है, सूक्ष्म विषयों को समझने व ग्रहण करने में असमर्थ बना रहता है। व्यवहार की अपरिपक्वता के परिणामस्वरूप व्यक्ति अपने आचरण से अपने ही निरे-निरे शत्रु तैयार कर लेता है। किसी का प्रिय या विश्वासपात्र नहीं बन पाता। ऐसे व्यक्ति से सभी लोग बचकर निकलना चाहते हैं।

शरीर की अपरिपक्वता को दूर करने के लिए व्यक्ति को उचित खान-पान, उचित सोना-जागना,

उचित व्यायाम (शारीरिक श्रम) व ब्रह्मचर्य इन चार साधनों का प्रयोग करना होता है। पूर्ववर्ती आचार्यों ने भोजन के विषय में हितभुक-मितभुक-ऋतभुक ऐसा कहकर त्रिसूत्री कार्यक्रम दिया। हितभुक अर्थात् अपनी प्रकृति, अवस्था, देश, काल व पदार्थ की सात्त्विकता, असात्त्विकतादि का विचार करके खाने वाला। सब व्यक्तियों को सब भोज्य पदार्थ अनुकूल नहीं होते, अतः शास्त्र व अनुभवी लोगों से सहायता लेकर, साथ में अपने स्वयं के भी अनुभवों से लाभ उठाकर व्यक्ति को यह निर्धारण करना चाहिए कि मेरे लिए कौन सा भोजन हितकारी है और कौन सा अहितकारी। दूसरा मितभुक से तात्पर्य है परिमित मात्रा में खाने वाला, क्योंकि सात्त्विक और हितकारी पदार्थ भी अधिक मात्रा में सेवन किया गया तामसिक हो जाता है। तीसरा है 'ऋतभुक' अर्थात् सत्य कमाई का खाने वाला। एक दूसरे दृष्टिकोण से भी जांच-पड़ताल की जा सकती है। 'कितना' 'कब' और 'क्या' इन तीनों प्रश्नों को ध्यान में रखकर जो भोजन किया जाता है वह अवश्य ही शरीर के हित में होगा। 'जल्दी सोना, जल्दी उठना व दिन में न सोना' ये तीन बातों निद्रा के विषय में ध्यान रखने की हैं।

योगासन, प्राणायाम, दौड़ना, तैरना, खेत में काम करना, कस्सी से भूमि खोदना इत्यादि व्यायाम के अनेक रूप हैं जो अपनी प्रकृति रुचि व सामर्थ्य के अनुसार निर्धारित किए जा सकते हैं अर्थात् चौबीस घण्टे में कम से कम एक और तो पसीना निकलना ही चाहिए। शरीर के पूर्ण स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त आवश्यक चतुर्थ साधन है-आठ प्रकार का ब्रह्मचर्य (मन की सहज शान्ति, निर्मलता, पवित्रता, निर्विकार स्थिति का बने रहना), इन चारों साधनों के सतत अनुष्ठान करते रहने से शरीर अच्छी प्रकार सध जाता है। बोलते समय बोलने वाला छान-छान कर यदि शब्दों को बोले और मन के साथ सदा वाणी का योग बना रहे तो वाणी के विषय में 'सिद्ध' हो सकता है। वाणी तो अपना काम कर रही होती है, पर मन उससे युक्त नहीं रहता-उस समय वाणी के द्वारा सब अनर्थ पैदा किये जाते हैं। ऋग्वेद के ज्ञानसूक्त में यही तो कहा गया है-

सक्तुमिव तितउना पुनतो यत्र

धीरा मनसा वाचमक्रता।

**अत्रा सखायः सख्यानि जानते
भद्रौषां लक्ष्मीर्निहिताधिवाचि॥**

जैसे चालनी से सत्तू को छानते हैं वैसे ही धीर पुरुष मन के साथ अर्थात् होश में रहते हुए वाणी का प्रयोग करते हैं। वे वाणी के सखा हुए-हुए मित्रता के नियमों को जानते हैं। इस रूप में जिन्होंने वाणी की साधना की है उनकी वाणी में समस्त शोभा का वास हो जाता है। जैसे शरीर की साधना में व्यक्ति शारीरिक दुःखों से बचने के लिए प्रवृत्त होता है, उसी प्रकार बिना साथी हुई वाणी से मिलने वाले दुःखों का सूक्ष्मता से अवलोकन व्यक्ति को 'वाणी की साधना' करने हेतु आन्तरिक रूप से तैयार कर देता है। साधक जब पुनः पुनः इस बात को देखता है कि शरीर के फिसलने से तो केवल हड्डी ही टूटती है, पर वाणी के फिसलने से तो सब कुछ ही टूट जाता है तो इस विषय में उसकी सजगता निरन्तर बढ़ती जाती है। मन की अपरिपक्वता को हटाने के लिए साधक अभ्यास, वैराग्य, ईश्वर-प्रणिधानादि योग साधनों का अनुष्ठान प्रारम्भ करता है। योग-दर्शन, उपनिषद् व अन्य सभी आध्यात्मिक महापुरुषों के आदेश-उपदेश व निर्देश इसी मन की साधना में सहयोग करने के लिए ही प्रवृत्त हुए हैं। साधक जब अपने सामने मन की साधना करने वाले और न करने वाले दोनों व्यक्तियों को देखता है तो उसे एक का जीवन अत्यन्त क्लेशमय और दूसरे का आनन्दमय दिखाई देता है। इस मार्ग पर कदम बढ़ाने से जो थोड़ा सा स्वयं का अनुभव उसे प्राप्त हुआ

साधना के इच्छुक सम्पर्क करें

आत्म-शुद्धि-आश्रम' बहादुरगढ़ में आधुनिक ढंग से शौचालय, रसोई, स्नानगृह आदि से सुसज्जित कमरे साधक-साधिकाओं के लिए उपलब्ध हैं। यहाँ की विशेषता आश्रम में दोनों समय यज्ञ-उपदेशादि, पुस्तकालय, निकट अस्पताल व्यवस्था, एकान्त-शान्त वातावरण। आश्रम "दिल्ली के अन्दर- दिल्ली से बाहर"। रेल-बस आदि की चौबीस घण्टे सुविधा। इच्छुक साधक- साधिकायें सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक, दूरभाष: 01276-230195 चलभाष: 9416054195

है उसके कारण ही वह इस साधना को जीवन का परमावश्यक भाग समझ कर इसके लिए अधिकाधिक अपना प्रयत्न प्रारम्भ कर देता है। उत्तम से उत्तम वस्तु, प्रेम से भरे हुए व्यक्ति ऊंचे से ऊंचे विचार भी व्यक्ति को कुछ सुख नहीं दे पाते यदि मन सधा हुआ नहीं है-साधक इस बात को बार-बार अनुभव करता है।

शास्त्र, श्रवण, मनन, निदिध्यासन व सुविचार के द्वारा बुद्धि निरन्तर परिपक्व होती जाती है। परिपक्व बुद्धि में संशय छिन्न-भिन्न हो जाते हैं। जीव को ठीक से समझने व देखने का सामर्थ्य उत्पन्न हो जाता है। इस हेतु बुद्धि की साधना को महत्त्व देता हुआ साधक इसे भी अपने लिए परमावश्यक चीजों में से एक समझता है।

इसी प्रकार व्यवहार की साधना करता हुआ साधक दूसरों के साथ माधुर्ययुक्त, राग द्वेषरहित, सम्मान, विनम्रता व सहयोग सहित व्यवहार रखता हुआ सबका प्रिय बना रहता है। जो कर सकता है वही बोलता है, कभी बढ़-चढ़कर बातें नहीं करता। अपनी

हानि करने वालों से सावधान तो रहता है पर कभी भी किसी भी अवस्था में उनका अहित नहीं चाहता।

अध्यात्मविद्या क्या है? जिस विद्या के द्वारा आत्मज्ञान होता है, आत्मा का अनुभव होता है वह अध्यात्मविद्या है। सामान्यतः व्यक्ति को बाह्य जगत, जिसको कि हम इन्द्रियों के द्वारा जान रहे हैं, उसका अनुभव होता है। वह विविध प्रकार के मानसिक व शारीरिक सुखों व दुःखों को जानता है, दूसरों से मिले सम्मान और अपमान को जानता है, अच्छी बुरी परिस्थितियों को जानता है, इन्द्रिय संवेदनाओं को जानता है, अर्थात् जो उसकी पहुँच के भीतर है उसे वह जान लेता है किन्तु कुछ अदृश्य चीजें, कुछ अदृश्य तत्त्व भी हैं जिन्हें वह नहीं जानता। उन्हीं अदृश्य चीजों में से आत्मा, परमात्मा, पुनर्जन्म, कर्मफल, कर्मसंस्कार, सम्प्रज्ञात व असम्प्रज्ञात समाधि, परवैराग्य, विप्लवरहित विवेक ख्याति इत्यादि कुछ रहस्यमय तत्त्व हैं। जिस विद्या से इन अज्ञात तत्त्वों को जानने का मार्ग प्रशस्त होता है वह है 'अध्यात्मविद्या'।

धूप अगरबत्ती एवं गायत्री महिमा हवन सामग्री

ऋतु अनुकूल

उत्तम प्रकार की जड़ी-बूटियाँ द्वारा संस्कार विधि के अनुसार केवल उपकार की भावना से लागत-मात्र मूल्यों पर उपलब्ध

विशिष्ट	32.00	रु. प्रति किलो
उत्तम	40.00	रु. प्रति किलो
विशेष	50.00	रु. प्रति किलो
डीलक्स	70.00	रु. प्रति किलो
सर्वोत्तम	125.00	रु. प्रति किला
सुपर डीलक्स	300.00	रु. प्रति किलो

इसके अतिरिक्त अध्यात्म सुधा विधि के अनुसार हर प्रकार की हवन सामग्री आर्डर पर तैयार की जाती है।

निर्माता :

मै. लाजपतराय सामग्री स्टोर

856, कुतुब रोड, दिल्ली-110006

फोन : दुकान-23535602, 23612460, फैक्ट्री-32919010, निवास-25136872



आर्य समाज और वेद प्रचार

- डॉ. महेश विद्यालंकार

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है “ऐसा क्रांतिकारी उद्घोष ऋषि दयानन्द से पूर्व किसी ने नहीं किया। वर्तमान में इतने शंकराचार्य, पंथ, सम्प्रदाय, महन्त आदि हैं, कोई भी वेदों के प्रति ऐसी मान्यता व धारणा नहीं रखते हैं। ऋषि की महत्त्वपूर्ण विशेषता व देन है वेदों की ओर लौटो, मेरी नहीं वेदों को मानो। वेदज्ञान ही आज के भूले, भटके, अशांति, संघर्ष, हिंसा, भ्रष्टाचार, अनाचार आदि में लिप्त मानव समाज को सच्चे सुख, शान्ति, प्रसन्नता, नीरोगता विश्वशान्ति, विश्वबधुत्व और विश्वमानवता का मार्ग दिखा सकता है। वेदज्ञान सार्वभौमिक सार्वकालिक सार्वदेशिक तथा सार्वजनिक है। वेद परमात्मा का आदेश, उपदेश और सन्देश है। वेदज्ञान इस देश की अद्वितीय सम्पदा है।

आर्य समाज ऋषि दयानन्द का जीवित-जागृत स्मारक और उत्तराधिकारी है। स्वामी जी के अधूरे स्वप्नों, कार्यों की पूर्ति की जिम्मेदारी आर्य संगठनों, सभाओं, संस्थाओं एवं आर्यसमाज की है। कोई संस्था, संगठन व महापुरुष अमर व जीवित विचारों और सिद्धान्तों से रहता है। ऋषि स्वयं में सिद्धांत व विचार थे। वेद प्रचार आर्यसमाज को विरासत, वसीयत एवं परम्परा में मिला है। आर्यों! ऋषि का अमर संदेश गूँज रहा है। वेद, वेद, वेद प्रचार करो, वेदानुकूल जीवन जीओ, वेदज्ञान जन-जन तक पहुँचाओ। जितना वेद ज्ञान का प्रचार-प्रसार होगा, उतना संसार से अज्ञान, जड़ता, पशुता, ढोंग, पाखण्ड आदि दूर होंगे। सच्चे अर्थ में मानव, मानव बन सकेगा। वेदों का जीवन-दर्शन जगत को सीधा सच्चा, एवं सरल मार्ग दिखाता है। आर्य समाज का मुख्य एजेण्डा वेद प्रचार है, वेद प्रचार घटने के कारण ही, आज अन्धविश्वास ढोंग, पाखण्ड, जड़पूजा, गुरुवाद आदि बढ़ रहा है। धर्म, भक्ति और परमात्मा बाजार-व्यापार बन रहे हैं। धर्म के नाम पर अधर्म फैल रहा है। जो आज धार्मिक क्षेत्र में अन्धकार व पाखण्ड फैल रहा है। उसमें आर्य समाज प्रकाश स्तम्भ की भूमिका निभा सकता है।

कभी आर्य समाज जागते रहो, जागते रहो की भूमिका में था। आर्य समाज का अतीत अत्यंत प्रेरक, उज्ज्वल, अनुकरणीय, स्मरणीय एवं वन्दनीय रहा है। जितना गर्व-गौरव करें, थोड़ा है। वर्तमान अत्यंत चिन्तनीय व विचारणीय हो रहा है। सर्वत्र मूल में भूल हो रही है। कहाँ के लिए चले थे? कहाँ जा रहे हैं। जो पहले हमारी साख, विश्वसनीयता पहचान, सम्मान व आकर्षण था, उसमें तेजी से गिरावट आ रही है। हमारे अनुयायी तेजी से कम हो रहे हैं। दैनिक, साप्ताहिक वार्षिकोत्सवों, यज्ञ कथा आदि में उपस्थिति चिन्तनीय हो रही है। उत्सवों पर लोगों को लंगर का प्रलोभन दिखाकर लंगर भीड़ जुटाई जा रही है। पुराने विद्वान, वक्ता, संन्यासी, भजनोपदेशक, कार्यकर्ता, सदस्य अधिकारी आदि जा रहे हैं। उस तीव्रता से नये लोग नहीं आ पा रहे हैं। पहले भवन कच्चे होते थे लोग विचारों, सिद्धांतों, आदर्शों और आचरण से पक्के होते थे। आज उल्टा हो रहा है। भवन पक्के बन रहे हैं। लोग जीवन व आचरण से कमजोर हो रहे हैं। तेजी से आर्यसमाज के पास भवनों, स्कूलों, संस्थाओं, संगठनों आदि की भौतिक सम्पदा अरबों में है। बाहर का कलेवर लम्बा चौड़ा है, मगर आन्तरिक दृष्टि से स्थिति गंभीर व शोचनीय है। जो हमें लड़ाई, संघर्ष, विवाद, अज्ञान, अशिक्षा, ढोंग, पाखण्ड आदि के विरोध में लड़नी चाहिए थी। वह आपस में ही लड़ पड़े। आर्यसमाज को बाहर से किसी ने कमजोर नहीं किया, वह अपनों से ही कमजोर हो रहा है। आपसी स्वार्थ, अहंकार के कारण विवाद व संघर्ष हैं। इसके मूल में एक मजबूत कारण यह भी है कि हमारे जीवन, विचारों व आचरण में धार्मिकता, आध्यात्मिकता, नैतिकता, तप, त्याग, सेवाभाव आदि की कमी ही रही है। ये बातें जीवन को सँभालती व सन्तुलित रखती हैं। संध्या व यज्ञ धार्मिक जीवन के आधार हैं। ऋषि का जीवन कह रहा है। भक्ति से शक्ति मिलती है। उन्होंने ईश्वरोपासना कभी नहीं छोड़ी। जो हमारे यज्ञ, कथा, सत्संग व कार्यक्रमों में सात्विकता, धार्मिकता, स्वच्छता, शान्तिमय वातावरण, प्रेरकप्रभाव आदि होना चाहिए, उसका तेजी से अभाव

हो रहा है। हमें दूसरों से सीखना चाहिए। आज हमारे कार्यक्रम जलसा, जुलूस, लंगर, फोटो, माला, स्वागत, सम्मान, भाषण, प्रस्ताव योजनाओं आदि तक सीमित हो रहे हैं। क्रियात्मक व प्रेरक जीवन से दूर हो रहे हैं। जो आर्यसमाज कभी दूसरों की शुद्धि करता था। आज उसे सच्चाई व ईमानदारी से अपनी शुद्धि की जरूरत है। आर्यसमाज की भ्रष्ट, स्वार्थ, पदलिप्सा, अहंकार आदि की राजनीति ऋषि के मिशन को खोखला, जर्जरित, कमजोर तथा प्रभावहीन बना रही है। भावनाशील ऋषिभक्त, आर्यविचारधाराप्रेमी, समाज हितैषी लोग अन्दर से दुःखी, बेचैन और आहत हैं, उनकी न कोई सुनता है और न मानता है।

वेद प्रचार जनता से जुड़ने, उस तक पहुँचने और सन्मार्ग दिखाने का उत्तम मार्ग है। आर्यसमाज के पास मौलिक, अद्वितीय सम्पदावैचारिक, चिन्तन और मान्यताएँ हैं। आज भी आर्यसमाज सर्वोत्तम विचारधारा का धनी है। आज संसार सुविचारों के अभाव में जीवन व जगत को नर्क बनाकर जी रहा है। आर्यसमाज का जो जीवन दर्शन है। वह हमें इहलोक और परमार्थ की सुखद-विचार दृष्टि देता है। व्यक्ति परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्वनिर्माण इसका अन्तिम लक्ष्य रहा है। आज आर्य समाज जनता से कट व हट रहा है। आज युग मीडिया, विज्ञापन व प्रचार का है। दुर्भाग्य है कि आज तक आर्यसमाज अपना वैदिक चैनल नहीं बना सका है जबकि हम महासम्मेलनों पर करोड़ों रुपये कुछ समय के लिए खर्च कर देते हैं। इतने में रचनात्मक, प्रेरक उपदेशक विद्यालय व गुरुकुल चल सकता है। जोकि स्थायी निर्माण का कार्य है। जिनके पास सिद्धान्त, विचार, आदर्श, जीवनमूल्य, सत्यज्ञान, और संस्कृत-संस्कृति बोध नहीं है वे मीडिया, चैनलों, सार्वजनिक मंचों पर छा रहे हैं। आर्य समाज के पास वेदज्ञान, ऋषि परम्परा, यज्ञ, प्रेरक, सात्विक, आध्यात्मिक भक्तिपूर्ण भजन, योग का सत्यस्वरूप आदि हैं। इनके द्वारा जनता को बुलाया व जोड़ा जा सकता है। आज हम आर्य विचारधारा और ऋषि को, आम आदमी व युवापीढ़ी तक नहीं पहुँचा पा रहे हैं। पौराणिकों ने रामचरित मानस और

हनुमान चालीसा को घर-घर तक पहुँचा दिया। सभी पढ़ व सुन रहे हैं। आर्यसमाज वेदों को सरल भाव में घर-घर तक नहीं पहुँचा सका है। इस विषय पर गंभीरता से सोचने व कदम उठाने की जरूरत है। 'वेद की ज्योति जलती रहे,' नारे से काम नहीं चलेगा। आज हम देश, काल, समय के अनुसार विद्वानों, पुरोहितों, भजनोपदेशकों, प्रचारकों संयासियों आदि को तैयार नहीं कर पा रहे हैं। आर्य समाज के पास युवकों को जोड़ने वाली प्रेरक संस्थाएँ हैं जो आधुनिक समयानुसार उन्हें अपनी ओर आकर्षित कर सकें। आज की युवा पीढ़ी भटकनर अन्धविश्वास व अज्ञान में फँस रही है। वह सत्य व शांति चाहती है। वह ढोंग पाखण्ड, आडम्बर, गुरु महन्तों सन्तों आदि से तंग हो रही है। आर्यसमाज के पास सद्ज्ञान, विचार, प्रेरणा व जीवनदर्शन है। किन्तु, परन्तु, लेकिन हमें कहना आता है, करना नहीं आता। युवापीढ़ी भाषण नहीं आचरण देखती है। आर्यसमाज को अपने स्वरूप को सँभालने तथा पुनर्मूल्यांकन की जरूरत है। वर्तमान जीवन जगत को ज्वलंत समस्याओं का समाधान वैदिक जीवन-दर्शन में है। अतः आर्यो उठो, जागो, सोचो, विचारो, करो। यह समय विवादों को नहीं संवादों का है। चिन्ता नहीं चिंतन करो। जिन उद्देश्यों आदर्शों व सिद्धांतों के लिए ऋषिवर ने आर्यसमाज बनाया था। उन्हें समझो, पकड़ो और आगे बढ़ाओ। यही वेद प्रचार है।

सूचना

प्रसन्नता और हर्ष का विषय है कि आचार्य राजहंस जी मैत्रेय द्वारा योग साधको की उन्नति के लिए लिखित महर्षि पतञ्जलि प्रणीत, "योगदर्शन" पर राजभाष्य एक सरल सुबोध वैज्ञानिक दृष्टि में पुस्तक छप चुकी है। जो योग साधकों के लिए अत्यन्त उपयोगी ही नहीं अपितु आत्मिक उन्नति में मील का पत्थर साबित होगी।

पुस्तक प्राप्ति के लिए सम्पर्क सूत्रः

पतञ्जलि वैदिक साहित्य विक्रय केन्द्र

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

आचार्य राजहंस मैत्रेय, मो. 9813754084

मर्यादा पुरूषोत्तम श्री रामचन्द्र जी का जीवन-चरित्र

गतांक से आगे

—राजवीर सिंह आर्य, बहादुरगढ़

हनुमान: महाबली हनुमान की उत्पत्ति और वंशावली के विषय में पुराणों एवं कल्पना पर आधारित विषय और मनघडन्त कहानियों पर टिका हुआ है। इस पर चर्चा ना ही करें तो अच्छा है। कुछ बातें ऐसी हैं जिनको हम आर्य लेखकर कहलाने वालों की पुस्तकों में भी पढ़ते हैं। उनका वर्णन करना आवश्यक समझते हैं। किष्किन्धा राज्य के अधीन महेन्द्रपुर और रतनपुर की रियासतें आती थी। हनुमान के दादा प्रहलाद राय विद्याधर थे और उनकी महारानी का नाम केतूमती था। इनसे पवन केसरी नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। इनका विवाह महेन्द्रपुर के राजा महेन्द्रराय की पुत्री अंजनी के साथ हुआ। पवन केसरी ने विवाह उपरान्त प्रतिज्ञा की थी कि मैं बारह वर्ष तक ब्रह्मचारी रहने के पश्चात ही सन्तान उत्पत्ति करूंगा। बाली और रावण में मित्रता होने के कारण वे दोनों कुबेर के साथ युद्ध कर रहे थे। उसमें पवन केसरी भी बाली की तरफ से युद्ध में सम्मिलित था। उसी समय के दौरान पवन केसरी अपनी सेना के साथ कहीं जा रहे थे। रास्ते में रात होने के कारण जंगल में ही सेना को रोककर विश्राम कर रहे थे। इतने में ही एक पक्षी की आवाज सुनी जो बहुत दर्दभरी थी। केसरी ने मन्त्री से पूछा यह कौन सा पक्षी है जो इस समय बोल रहा है? मन्त्री ने कहा यह चकवी अपने नर चकवे के विरह में तड़प रही है। यह सुनते ही पवन को याद आया कि आज 12 वर्ष पूरे हो गये हैं और उनकी पत्नी अन्जनी भी इसी तरह विरह में तड़प रही होगी। मन्त्री को बताकर वह अपने विमान से रात को ही अन्जनी के महल में गये और अन्जनी से मिलकर वापिस जाते समय किसी को बिना बताये ही एक अंगूठी अन्जनी को देकर वापस चले गये और प्रातः अपनी सेना लेकर युद्ध में रत हो गये। युद्ध 12 महीने तक चलता रहा। पीछे से रानी केतूमती ने जाना कि अंजनी गर्भवती है। रानी ने उसके पिता के पास सन्देश भेज दिया कि आपकी लड़की चरित्रहीन हो गई है, इसे आप ले जाओ। उसके पिता ने भी उसे अपने पास रखने से मना कर दिया, पर उसे उसकी

दासी बसन्तमाला के साथ दोनों को जंगल भेज दिया। वहाँ वे दोनों विलाप कर रंही थी। तभी शिवजी और पार्वती विमान से जा रहे थे तो उन्होंने इस घटना को देखकर विमान को धरती पर उतारा और उनसे सब समाचार जानने पर उन दोनों को वे अपने साथ कैलाश पर ले गये। वहाँ पर हनुमान का जन्म हुआ था। बाल्यकाल में झूले से झूलते समय नीचे गड्ढे में पत्थर पर गिर पड़े। उठाकर देखा तो उसको कोई चोट नहीं आई थी। तभी से उसे बजरंगी कहने लगे। एक दिन हनुमान जी के मामा प्रतिसूर्य अपनी पत्नी रविसुन्दरी के साथ विमान में बैठकर शिवजी के पास आये थे। तब उन्होंने अंजनी को वहाँ देखा और कहा कि आपकी खोज में पवन पागलों की तरह तुम्हें ढूँढ़ रहे हैं। मैं उन्हें बता दूंगा और वो आपको शीघ्र ही ले जायेंगे। पवन अपनी पत्नी अंजनी को ले आये और हनुमान को विद्या के लिए अगस्त ऋषि के आश्रम में भेज दिया। हनुमान तीन भाई और थे। उनका नाम ऋतुमान, कीर्तिमान व अंशुमान था। हनुमान का विवाह सुग्रीव की बेटी पद्मरागा से हुआ आदि आदि।



टिप्पणी: बड़े आश्चर्य की बात है कि रामायण में सुग्रीव, बाली जाम्बवान आदि की वंशावली तो कहीं नहीं है। फिर हनुमान की पूरी असम्भव सी गाथा कहाँ से आ गई? वैसे हम अपने अध्ययन, मनन व चिन्तन

आपकी सुविधा हेतु

आप आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ द्वारा संचालित विभिन्न प्रकल्पों हेतु अपना पावन दान निम्नलिखित खाते में सीधा जमा कराकर पुण्य के भागी बन सकते हैं—

बैंक	नाम व खाता संख्या	बैंक कोड संख्या
इलाहाबाद बैंक, रेलवे रोड, बहादुरगढ़, झज्जर	आत्म शुद्धि आश्रम 20481946471	IFSC-A0211948

अनुसार लिख रहे हैं कि रामायण में इस तरह की बातें जो हनुमान से सम्बन्धित उपरोक्त लिखी हैं पढ़ने में नहीं मिलती हैं, जैसे कि शिवजी को उस समय कैलाश का राजा होना, हनुमान का विवाह, उसकी पत्नी का मगरमच्छ द्वारा निगल जाना, सुग्रीव का दामाद होना, हनुमान का सूर्य को मुख के अन्दर ले जाना तथा हनुमान के तीन भाई का होना आदि, कपोल कल्पित बातें सामने आती हैं। यहाँ तक उनके लड़के का नाम जो पद्मरागा से उत्पन्न हुआ था मगरध्वज बताया जाता है। हनुमान के विषय में हमने पीछे काफी कुछ लिखा है। सम्बन्धित विषय पर हमारा विचार जिसको हम काफी समीक्षा करने के पश्चात् लिख रहे हैं वह इस प्रकार है:-

हनुमान को अपना परिचय देने के चार अवसर रामायण के अनुसार आये हैं। पहला जब राम और लक्ष्मण को देखकर सुग्रीव घबरा उठा था, उस समय हनुमान विप्र (पंडित) के वेश में उन दोनों के पास गया और अपना परिचय इस प्रकार दिया, प्रमाण देखिये:-

**युवाभ्यां स हि धर्मात्मा सुग्रीवः सख्यमिच्छति।
तस्य मां सचिवं वित्तं वानरं पवनात्मजम्॥**

कि.का. सप्र 2.24

(अर्थात् वह धर्मात्मा सुग्रीव आप दोनों से मैत्री करना चाहते हैं मुझे आप उनका मन्त्री पवनसुत वानर जाने। इससे पहले हनुमान ने अपना नाम बताया है वह भी प्रमाण आप देखें।

राज्ञा वानर मुख्यानां हनुमान्नाम वानरः।

कि.का. 2/23

(अर्थात् मैं वानरों के राजा सुग्रीव का भेजा हुआ हनुमान नामक वानर आपके समीप आया हूँ।)

दूसरा अवसर तब आता है जब हनुमान सीता की खोज में लंका गया हुआ था और वहाँ पर सीता के मिलने पर अपना परिचय इस प्रकार दिया:-

रामस्य च सखा देवि सुग्रीवो नाम वानरः।

अहं सुग्रीव सचिवो हनुमान्नाम वानरः॥

कि. का. 17/8

(अर्थात् हे देवी! सुग्रीव नामक वानरराज जो राम का मित्र है, मैं उस सुग्रीव का मन्त्री हनुमान हूँ।)

तीसरा प्रकरण हनुमान का परिचय देने का तब आता है जब हनुमान ने सीता की खोज करने के पश्चात् रावण की सेना का बल जाँचने के लिए वाटिका को उजाड़ना शुरू किया और उसके एक पुत्र अक्षय कुमार को भी मार दिया। मेघनाद ने ब्रह्म अस्त्र (हवा में नशीला गैस छोड़ना) के द्वारा बेहोश करके पकड़ कर उसे रावण के सम्मुख लाया गया। तो रावण ने अपने श्रेष्ठ मन्त्री प्रहस्त को कहा कि इस दुरात्मा से पूछ कि ऐसा करने के पीछे इसका क्या प्रयोजन है और यह कौन है? कहाँ से आया है? प्रहस्त के पूछने पर हनुमान उत्तर देता है।

अहं सुग्रीवसन्देशाविह, प्राप्तस्तवात्तिके।

राक्षसेश हरीशस्तवां भ्राता कुशलमब्रवीत्॥

(सु.का.श्लोक 7)

अर्थात् मैं सुग्रीव का सन्देश लेकर यहाँ तुम्हारे समीप आया हूँ, हे राक्षसपति तुम्हारे भाई सुग्रीव ने तुम्हें कुशल कहा है।) यहां भी हनुमान एक नीति के अनुसार अपने को सुग्रीव का दूत बता रहा है और बालि से मित्रता होने के कारण सुग्रीव को भाई बता रहा है। और चौथा अवसर अपना परिचय देने का तब आता है जब राम विजय प्राप्त करने के पश्चात् अयोध्या लौटते हैं तो रास्ते में विमान रूकवा कर हनुमान को भरत के पास भेजते हैं। वहाँ पर भी हनुमान सम्बन्धी कोई परिचय नहीं पाया जाता। वास्तविकता तो यह है कि हनुमान की रामायण में जानकारी सीता हरण के पश्चात् जब राम और लक्ष्मण विदूषी शबरी के बताये अनुसार ऋष्यमूक पर्वत पर जाते हैं जब होती है। यह तो उत्तराखण्ड के लिखने वालों ने अनाप-शनाप झूठी बातें अश्लील कहानियाँ, मद्य व मांस का सेवन

सम्पर्क करें

पारिवारिक अनुचित व्यवहारों से उत्पन्न मानसिक उद्विग्नता, वैमनस्य, ईर्ष्याद्वेष आदि में मनोवैज्ञानिक समाधान, वेद, दर्शन, उपनिषद् गीता आदि साहित्य पर सुबोध व युक्ति पूर्ण प्रवचन वैदिक-यज्ञ तथा प्रभावोत्पादक ध्यान-योग साधना शिविरों हेतु सम्पर्क करें :

आचार्य राजहंस मैत्रेय, मो. 9813754084

आदि की बातें लिखकर इस ऐतिहासिक ग्रन्थ के महत्व को कम करके रख दिया। यहां तक हनुमान के नाम के ऊपर भी मनघडंत कहानी बनाई हुई है कि हनुमान बाल्य अवस्था में सूर्य का भक्षण करने निकला तो राहू की प्रार्थना पर इन्द्र ने हनुमान पर अपना वज्र का प्रहार करके हनुमान को नभो मण्डल से नीचे पृथ्वी पर गिरा दिया, जिससे उसकी हनु (ढोड़ी) टूट गई, इसी कारण से उस बालक का नाम हनुमान पड़ा और ना जाने क्या-क्या असम्भव बेटुकी और स्वप्न समान जी कहानियों की भरमार कर रखी है। हमारा इस संदर्भ में कहना है कि हनुमान वानर जाति का बहुत बड़ा बलवान योद्धा, वेदों का विद्वान और सभी विधाओं का ज्ञाता था। रामायण में हनुमान के पिता का नाम केसरी पवन कई जगह आया है, लेकिन उसके बाल्यकाल, यौवन अवस्था, विवाह, पत्नी, पुत्र, माता अयोध्या से वापस लौटने के पश्चात् आदि के विवरण को हम सही नहीं मानते हैं। हनुमान का जो पराक्रम, निर्भयता व प्रखर बुद्धि का परिचय रामायण में मिलता है, उससे हम हनुमान को अखण्ड बाल ब्रह्मचारी मानते हैं। हनुमान का जितना रोल रामायण में है वह उचित और सही है। वे एक मनुष्य थे, उनके माता-पिता का होना स्वाभाविक है लेकिन राम के अतिरिक्त और किसी की

वंशावली का वर्णन रामायण में पाया जाना तर्कसंगत नहीं है। इसे इतिहासकार अच्छी प्रकार जानते हैं। अब थोड़ा-थोड़ा संक्षेप में जाम्बवान, जटायू के विषय में वर्णन करते हैं। जैसा कि हमने बताया भी है कि उस समय में कुछ माण्डलिक राजा राज्य करते थे। किष्किन्धा में ही जाम्बवान अपने समय में सेना के प्रमुख थे और हनुमान की तरह ही बलशाली थे। ढलती आयु में भी उन्होंने युद्ध के अन्दर बहुत शौर्य का कार्य किया है। इससे ज्यादा और इतिहास इस वीर का नहीं मिलता है। इनको रीछ बताना, लिखाना या टी.वी. के अन्दर दिखाना इस महापुरुष के अपमान के साथ-साथ अज्ञानता भी है। इसी तरह गृध एक माण्डलिक प्रदेश था जिस पर श्येनी के बड़े पुत्र श्रीमान जटायु आर्य राज्य करते थे। इनका छोटा भाई सम्पति था। वृद्ध अवस्था में अपनी वैदिक परम्परा अनुसार वानप्रस्थ लेकर जंगलों में ईश उपासना के उद्देश्य से रहते थे। रामायण के इतिहास से इनके जुड़ने और राम का सहयोग करने के कारण इस महाकाव्य में इनका वर्णन आया है। श्रीमान जटायु आर्य जब राजा थे उस समय महाराजा दशरथ से इनकी मित्रता थी और मित्रता मनुष्यों से हुआ करती है पशु-पक्षियों को तो पाला जाता है।

आप आत्मशुद्धि आश्रम को निम्न प्रकार से सहयोग दे सकते हैं—

1. आत्मशुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य व आजीवन सदस्य बनकर, वार्षिक सदस्य स्वयं बनकर व अपने हितैषियों को बनाकर, विज्ञापन देकर अपने किसी हितैषी की स्मृति में उनका जीवनचरित्र छपवाकर।
2. बाल कल्याण सदन के छात्रों को पुस्तकें, कॉपी, वस्त्र देकर और धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय आदि सेवाकार्यों में आर्थिक सहयोग देकर एवं भोजन के लिए आटा, दाल, चावल आदि खाद्य सामग्री भेजकर। गौशाला में गौदान एवं खल-चूरी, दाना, भूसा आदि भेज सकते हैं।
3. बाल कल्याण सदन के छात्रों में से किसी एक को गोद लेकर उसका सम्पूर्ण व्यय 1000/- रुपये मासिक के हिसाब से साल भर का 12000/- रुपये छात्रवृत्ति देकर आप सहयोग कर सकते हैं।
4. आश्रम में प्रातराश, मध्याह्न का भोजन, मध्याह्नोपरान्त जलपान एवं रात्रिकाल के भोजन का व्यय लगभग 2500/- रुपये है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि 365 यजमान बनें। एक दिन का भोजन देकर भोजन समस्या का समाधान कर सकते हैं।

कमरों के नाम लिखवाने के इच्छुक सम्पर्क करें : आपके प्रिय आत्मशुद्धि आश्रम में 1 कमरा 31000/- 1 कमरा 100000/-, आप सभी दानी महानुभावों से निवेदन है कि अपना अथवा अपने किसी स्वजन की स्मृति मध्य उनके नाम का पत्थर लगवाकर अपने स्वजन का नाम उज्ज्वल कर पुण्य एवं यश के भागी बनें।

धन्यवाद! -व्यवस्थापक आश्रमसम्पर्क सूत्र : 01276-230195, 9416054195

पं. गुरुदत्त विद्यार्थी का विलक्षण व्यक्तित्व

- प्रो. ओमकुमार आर्य

आर्य समाज को यह गौरव प्राप्त है कि इसने संसार को ऐसे असाधारण प्रतिभा सम्पन्न विचारक तथा विद्वान दिये हैं जिन्होंने अपने ज्ञानालोक से मानवता का पथ आलोकित करके उसे प्रगति पथ पर अग्रसर होने में समर्थ बनाया, रास्ते के तिमिर को दूर हटाकर मानव मात्र को पथ की ठोकड़ों से बचाया, भटकने का भय दूर किया तथा वेदोक्त सत्य मार्ग दिखलाकर अम्युदय (अर्थ और काम) तथा निःश्रेयस् (धर्म तथा मोक्ष) की सिद्धि प्राप्त करने योग्य बनाया। महर्षि दयानन्द ने बिना किसी पक्षपात या पूर्वाग्रह के वेद-ज्ञान के दरबार सबके लिए समानरूप में खोले और सारे विश्व का कल्याण करने का लक्ष्य हमारे सामने रखा। उनकी यह उच्च भावना आर्य समाज के छठे नियम में स्पष्ट झलकती है जिसमें कहा गया है कि “संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।” प्रस्तुत लेख के चरित नायक मुनिवर पं. गुरुदत्त विद्यार्थी भी उन गिने-चुने अप्रतिम पाण्डित्य के धनी विद्वानों में से थे जिन्होंने अल्पायु में ही अपनी विलक्षण प्रतिभा एवं विद्वत्ता से विश्व की दिग्गज हस्तियों को हतप्रभ कर दिया तथा अपने अथाह ज्ञान, अकाट्य तर्क एवं अगाध आस्था की अमिट छाप विश्व के इतिहास के पन्नों पर छोड़ी। उन जैसी असाधारण प्रतिभायें सहज ही, ‘न भूतो न भविष्यति’ की कोटि में आती हैं जिनका यश ‘यावच्चन्द्र दिवाकरौ’ धराधाम पर बना रहता है। जिस प्रकार सौरमण्डल के एकछत्र सम्राट सूर्य की प्रचण्ड तेजस्विता अनुपमेय है, रात के राजा चन्द्रमा की शीतल, सुख दायिनी, सुधासम ज्योत्स्ना अपना सानी नहीं रखती उसी प्रकार मुनिवर पं. गुरुदत्त विद्यार्थी की प्रतिभा भी बेजोड़ ही कही जायेगी।

आपका जन्म अविभाजित भारत के प्रसिद्ध मुलतान नगर में 26 अप्रैल 1864 तदनुसार विक्रमी संवत् 1921 वैशाख शुक्ला 6 को हुआ था। आपके पिता मेहता रामकृष्ण फारसी के अच्छे विद्वान थे और उस समय

के पंजाब के शिक्षा विभाग में शिक्षक थे। माता अत्यन्त धार्मिक स्वभाव की अशिक्षिता घरेलू महिला थी। आपके वंशज ‘सरदाना’ नाम से प्रसिद्ध थे जिसे लोकभाषा में ‘सदाना’ कह दिया जाता था। आप अपने माता-पिता की इकलौती जीवित पुरुष-संतान थीं इस करके माता-पिता का भरपूर लाड-प्यार आपको मिला, मां तो प्रतिफल आपकी बलैयाँ लेती रहती थीं और तन मन से अपने प्रिय ‘मूले’ पर निछावर थीं। मूला कुछ बड़ा हुआ तो कुल गुरु ने उसे वैरागी नाम दे दिया और फिर वैरागी से गुरादित्ता नाम मिला जो आगे संशोधित एवं परिष्कृत रूप में ‘गुरुदत्त’ बन गया। और फिर मुनिवर पं. गुरुदत्त विद्यार्थी नाम से अतिशय विस्तीर्ण वट-वृक्ष बनकर अपने समय के काल खण्ड पर इस तरह छा गया कि अन्य प्रतिमायें बौनी प्रतीत होने लगीं तथा मिथ्याभिमानी विदेशी विद्वानों यथा मैक्समूलर, मोनियर विलियम्स, टी. विलियम पिन्कोट आदि का तो पूरी तरह मानों विलोप ही हो गया उनका दर्द और गर्व चूर-चूर हो गया।

उनकी शिक्षा दीक्षा अत्यन्त तीव्र गति से चली, बिल्कुल सरपट दौड़ से। हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी, उर्दू, फारसी, गणित, दर्शन, इतिहास, विज्ञान, भाषाविज्ञान आदि पर गुरुदत्त का पूर्ण अधिकार था। और वह भी 18-20 वर्ष की अल्पायु में। उनके पास बुद्धि नहीं मेधा थी और मेधा से भी आगे बढ़कर ऋतम्भरा थी। यूँ तो जीनियस होना भी सबके बस की बात नहीं हुआ करती किन्तु गुरुदत्त तो ‘जिनियस से भी कई कदम आगे ‘प्रॉडीजी’ की कोटि में थे। आठ वर्ष की आयु में यह ‘वैरागी’ झंग के जिला स्कूल में प्रविष्ट हुआ और शीघ्र ही ग्यारह वर्ष की आयु में मुलतान के ‘उच्च विद्यालय’ तक पहुँच गया। कहते हैं कि हाई स्कूल तक पहुँचते-पहुँचते उन्होंने उर्दू, फारसी में आदि भाषाओं पर इतना अधिकार प्राप्त कर लिया था कि उर्दू काव्य का फारसी में और फारसी का उर्दू में अनुवाद मुंह जुबानी चुटकियों में कर देते थे। किशोरावस्था में ही उनके ज्ञान का अनुमान इसी से भली भाँति

लगाया जा सकता है कि “मसनवी मौलाना रूम ‘दीवान-ए-हाफिज आइना ए मजहब हुनूद’ आदि पुस्तकें उन्होंने ने केवल पढ़ ली थी प्रत्युत उन पर बहस भी कर सकते थे। अष्टाध्यायी का सांगोपांग अध्ययन कर लिया था और पं. अक्षयानन्द को भी किशोर गुरुदत्त को ‘अष्टाध्यायी’ पढ़ाने में पसीने छूट जाते थे। अंग्रेजी के महाकवि चॉसर, स्पेन्सर, मिल्टन, शेक्सपियर, कूपर आदि को उन्होंने पूरी तरह कार्यालय आदि के साहित्य को भी उन्होंने गहराई से पढ़ा था और 1878 से 1883 तक नास्तिकता से मिलते जुलते जिस ‘संशयवाद’ सन्देहवाद’ और ईश्वर की सत्ता विषयक जिस घोर अविश्वास से वे ग्रस्त रहे वह भी इन्हीं पाश्चात्य विचारकों की पुस्तकों का ही परिणाम था, चाहे उसके लिए उत्तरदायी कारण कुछ और भी रहे होंगे।

उनकी शिक्षा-दीक्षा के क्रम को ही पहले सिरे चढ़ायें तो हम पाते हैं कि उन्होंने सन् 1881 में पंजाब विश्वविद्यालय से मैट्रिक की परीक्षा बड़े अच्छे अंक लेकर उत्तीर्ण की। वे पांचवे स्थान पर रहे थे। फिर सन् 1883 में उन्होंने इसी विश्वविद्यालय से इण्टर मीडियट आर्ट्स की परीक्षा सर्वप्रथम रहकर उत्तीर्ण की। सन् 1884 में बी.ए. प्रथम श्रेणी में तथा 1885 में एम.ए. (भौतिकी) प्रथम स्थान पाते हुये पास की। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि एम.ए. करते-करते उनका स्वास्थ्य भी खराब रहने लगा था, उन्हें डी.ए.वी. के लिये धन संग्रह के लिए भी जाना पड़ता था। इधर आर्य समाज के उत्सवों पर वक्तारूप में उनकी मांग भी बहुत बढ़ गई थी, पिता का स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहता था, उनका ध्यान भी रखना पड़ता था। इतना कुछ होते हुये भी आपने एम.ए. में प्रथम स्थान प्राप्त किया, यह कोई छोटी उपलब्धि नहीं थी। इस बीच सन् 1880 में आपने आर्य समाज मुलतान की सदस्यता भी विधिवत् ग्रहण कर ली थी। उनकी शैक्षिक योग्यता, अत्यंत प्रभावशाली वक्तृत्व शैली, विद्वत्तापूर्ण लेख बहुत ही सारगर्भित वार्तालाप-कला इस बात का मुंह बोलता प्रमाण है कि पं. गुरुदत्त वास्तव में ही अथाह, ज्ञान अतुलनीय पांडित्य एवं वैदुष्य के पुञ्जभूत साकार

प्रतिमान थे। वे पहले ऐसे भारतीय विद्वान थे जा पराधीन भारत में अंग्रेजों के राजकीय महाविद्यालय लाहौर में भौतिकी के सहायक प्राध्यापक नियुक्त हुये (सन् 1886)। वे इस रूप में भी पहले भारतीय लेखक थे जिनकी लिखी पुस्तक “वैदिक नामधेय पदावली (Terminology of the Vedas) इंग्लैण्ड के ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के बी.ए. संस्कृत के पाठ्यक्रम में शामिल की गई थी। उन्हें उस समय का बहुत ही अच्छे वेतन वाला बड़ा प्रतिष्ठित पद” अतिरिक्त सह आयुक्त (Extra Asstt. Commisioner) भी दिये जाने की पेशकश की गई थी किन्तु अपने स्वाभिमान और आत्म सम्मान की कीमत पर उन्हें कोई भी ऊंचा पद कभी स्वीकार्य नहीं था, लिहाजा यह पद भी ठुकरा दिया। जो कार्य वे करना चाहते थे उनके लिए ऐसे पद बाधक थे साधक नहीं, सो उन्होंने इस पेशकश को ठुकरा दिया। पंजाब केसरी ला. लाजपतराय उनके सहपाठी थे, मित्र भी उनसे 8-10 महीने छोटे भी थे। कई पत्रों में पं. गुरुदत्त ने लाला जी को इस बात के लिए कड़ी फटकार लगाई थी कि लाला जी अपने असली उद्देश्य की अनदेखी करके पद, पैसा, वकालत और राजनीति के पचड़े में पड़े हुये हैं। वे लाला जी को प्रायः करके ‘प्रियलाजपत’ कहकर संबोधित करते थे किन्तु आर्य समाज, ऋषि मिशन, वेद प्रचारादि में उनकी घटती रूचि देखकर कई पत्रों में इतनी नाराजगी व्यक्त की है कि ऊपर मात्र ‘लाजपत’ और नीचे तुम्हारा गुरुदत्त बस इतना ही लिखा मिलता है। वे वेदप्रचार, ऋषि भक्ति, संस्कृत के पठन पाठनादि के मामले में कभी कोई समझौता नहीं करते थे। और इसी के चलते वे जीवन के अंतिम एक-डेढ़ साल अपने प्राणों से भी प्रिय डी.ए.वी. संस्था से भी रूष्ट हो चले थे। वेद-प्रचार उनका जुनून था, ऋषि भक्ति उनकी दीवानगी और वैदिक आदर्शों को धराधाम पर साकार रूप देना उनकी धुन थी, बाकी सब गौण था। उनकी स्पष्ट मान्यता थी कि-

वेद प्रचार नहीं होना,
सिर्फ भाषण लच्छेदारों से

वेद-धर्म या महर्षि की
कोरी जय-जय कारों से
कथनी, करनी का भेद मिटा
जब हम मैदाँ में उतरेंगे
विश्व स्वतः ही जुड़ जायेगा
वैदिक आचार विचारों से।

मैंने शीर्षक में जो उल्लेख किया है कि पं. गुरुदत्त का विलक्षण व्यक्तित्व ज्ञान, तर्क और आस्था का त्रिवेणी संगम था। उनके ज्ञान की झलक तो उपर्युक्त पंक्तियों में हमने देख ही ली। उनके अकादमिक तर्क सटीक युक्तियाँ उनकी रचनाओं में यत्र, तत्र प्रचुर मात्रा में विद्यमान हैं उनके लेख 'दे रिजनेरेटर ऑफ आर्यावर्त (The Regenerator of Aryavarta) वैदिक मैगजीन (Vedic Magazine)' आर्य पत्रिकाओं में छपते रहते थे। उनके व्याख्यान भी बहुत सारगर्भित एवं वैज्ञानिकता पूर्ण होते थे वे वैदिक सिद्धांतों पर आधारित विषय चुनते थे तथा बहुत ही वैज्ञानिक ढंग से युक्तियुक्त शैली से विषय का प्रतिपादन करते थे। नमूने के लिए कुछ विषय देखिये त्रैतवाद, पुनर्जन्म, ईश्वर की कर्मफल व्यवस्था आदि वेद ही ईश्वरीय ज्ञान क्यों? मूर्तिपूजा, ब्रह्मचर्य, संसार का भावी धर्म आदि-आदि अब रही बात आस्था की। मैं तो सोचता हूँ कि उनके जीवन का अंतिम अर्द्ध दशक आस्था के सिवाय और क्या था? आस्था जिस अंतिम छोर तक जा सकती है, समझो उस अंतिम छोर के अंतिम बिन्दु पर गुरुदत्त खड़े थे। ईश्वर के प्रति आस्था, वेद के प्रति आस्था, ऋषि के प्रति आस्था और अपने प्रिय डी.ए.वी. के प्रति आस्था, इन सबको मिला देने से जो बना वही तो पं गुरुदत्त था। डी.ए.वी. की कल्पना को मूर्तरूप देने के लिए इतना परिश्रम किया कि स्वास्थ्य और अधिक बिगड़ता गया। समस्या यह थी कि गुरुदत्त का शरीर थक कर निढाल भले ही हो गया पर मस्तिष्क ने तो कभी आराम न करने की मानों कसम ही खा रही थी। उनकी डायरी बताती है कि ज्वर रहा, अतिसार रहा, अपचन रहा, अत्यंत कमजोरी अनुभव हुई पर चिंतन, लेखन, विचार विमर्ष व्याख्यान ज्यों के त्यों चलते रहे। वे बहुत जल्दी में थे कि ऋषि-मिशन को पूरा करना है, ऋषि को इसी

जीवन में जीना है और यही सनक जानलेवा बीमारी, क्षयरोग, बन गई। न डॉ. फतेहचन्द की दवा से लाभ हुआ, न डॉ. नारायणदास ही उन्हें रोगमुक्त कर पाये। हाँ 5-7 दिन यह जरूर लगा कि हकीम शेर अली की दवा अपना असर दिखा रही है पर वह तो बुझते दीपक की अंतिम लौ थी। मार्च 1890 के प्रथम पखवाड़े में स्वास्थ्य में कई उतार चढ़ाव आये किन्तु 18 मार्च को जो बिगाड़ शुरू हुआ वह अंग्रेजी हिसाब से 19 मार्च (आधी रात के बाद) और देशी हिसाब से 18 मार्च 1890 को असाधारण प्रतिभा के धनी, अनन्य, ऋषि भक्त पं. गुरुदत्त को निर्ममतापूर्वक हमसे छीन ले गया।

वृद्धा मां बिलखती रह गई, युवा विधवा पत्नी विलाप करती रह गई, दो अबोध बालक पिता विहीन हो गये, आर्य जगत् अपने यशस्वी सपूत से वञ्चित हो गया और ऋषि पथ का अलबेला पथिक, वेद ऋचाओं का सुरीला गायक, 'सत्यार्थप्रकाश' का बेजोड़ अध्येता एवं गवेषक चुपचाप महाप्रयाण के अनन्त पथ पर निकल गया। गुरुदत्त चला गया किन्तु एक संदेश भी हमारे लिये छोड़ गया अर्थात् वह ऋषि को 'जीना' चाहता था, वह अकेला इतने बड़े काम को करने चला था, क्या हम सब मिलकर भी अलपांश में भी क्या गुरुदत्त को जी सकते हैं। क्या थोड़ी बहुत झलक भी उसके जीवन की अपने जीवन में पैदा कर सकते हैं। क्या आर्य जाति की कोख एक और गुरुदत्त संसार को दे सकती है? संकल्प करना होगा कि हम गुरुदत्त और गुरुदत्त की परम्परा को मरने नहीं देंगे। ध्यान रहे बहुत दुष्कर कार्य है। गुरुदत्त जैसी हस्तियाँ रोज-रोज नहीं मिला करतीं, बहुत अधिक पुण्यों का फल लम्बी अवधि के बाद में जाकर गुरुदत्त जैसे नर-रत्न के रूप में मिला करता है-

सूर्य, चंद्र का चक्र तो नित्य चला करता है
हर पेड़ बहारों में हर साल फूलता फलता है
इतिहास के गर्भ में किन्तु समा जाती है सदियाँ
तब जाकर कहीं एक गुरुदत्त मिला करता है।

मुनिवर गुरुदत्त तुम्हें शत-शत नमन।

- जवाहर नगर, पटियाला चौक, जीन्द (हरियाणा)

साधक बुद्धि और विवेक का उपयोग करे

- श्री कन्हैया लाल जी आर्य

साधक के जीवन में तीन बातों होनी चाहिए 1. दोष निवृत्ति, 2. गुणाधान, 3. हीनांगपूर्ति। हमारे चित्त में जो दुर्गुण, दुराचार के संस्कार पड़े हैं उनको यम, नियमों के पालन द्वारा निकालना दोष निवृत्ति है। मैत्री, करुणा, मुदिता, सहजता, सरलता, परोपकार आदि सदगुणों को लाना गुणाधान है। जिस कमी के कारण हम दीनहीन तथा तुच्छ हो रहे हैं, हम मृत्यु, जरा, व्याधि के शिकार हो रहे हैं उस कमी को पूर्ण करना हीनांगपूर्ति है और वह कमी है आत्मज्ञान की।

मनुष्य में कुछ न कुछ दोष अवश्य होते हैं, इन दोषों को यम, नियमों को पालने, प्राणायाम, ध्यान से निकाल सकते हैं। जब हम दोषों को निकालते जायेंगे मन रूपी पात्र में स्थान रिक्त हो जायेगा तो संकल्प शक्ति से रिक्त स्थान को भरने के लिए सदगुणों का प्रवेश कराते जायें। मन की प्रवृत्ति को उत्तम बनायें। हमें अपने मन के दोषों को छिपाना नहीं होगा। यदि छिपायेंगे तो और अधिक बढ़ जायेंगे। यदि इन दोषों पर विचार कर प्रायश्चित्त करेंगे, केवल प्रायश्चित्त ही नहीं बल्कि पुनः उन दुष्ट कार्यों को न करने का संकल्प करेंगे तो वह दोष दूर होते जायेंगे। यदि आप परमात्मा को अपना मानोगे तो दोष दूर करने में सरलता होगी। प्रत्येक बुरे कार्य को करने से पूर्व यह विचार करेंगे कि हमें परमात्मा बुरे कार्य को करने से पूर्व यह विचार करेंगे कि हमें परमात्मा देख रहा है और इस दुष्ट कार्य का दण्ड भी मुझे निश्चित रूप से मिलेगा, तो हम बुरे कार्य करने से बच पायेंगे।

हम संसार की जितनी भी बातें कर लें, हम अपूर्ण ही रहेंगे, क्योंकि हम स्वयं अपूर्ण हैं, अल्पज्ञ हैं। अल्पज्ञ और अपूर्ण कभी भी पूर्ण नहीं हो सकता। इसलिए संसार हमें पूर्ण आनन्द प्राप्त नहीं करा सकता। यह सृष्टि ((प्रकृति) सत् है अर्थात् इसकी सत्ता है। जीवात्मायें सत् भी चित भी हैं। आत्माओं का अस्तित्व है, चेतनता भी है परन्तु इसमें आनन्द नाम की वस्तु का अभाव है। परन्तु परमपिता परमात्मा सच्चिदानन्द अर्थात् सत्-चित्त+आनन्द है। जिसके पास जो वस्तु होती है, वही उसका स्वामी होता है। और उससे ही प्राप्त की

जा सकती है। सृष्टि में न चेतनता है न आनन्द है। जीवात्मा में चेतनता तो है परन्तु आनन्द नहीं है। परम पिता परमात्मा का अस्तित्व है, चेतनता है और आनन्द भी है इसलिए परमात्मा की शरण में जाने में ही आनन्द की प्राप्ति होगी। जैसे यदि हम अग्नि के



पास जायेंगे तो हमें ऊष्मा मिलेगी।

जल के पास जायेंगे तो शीतलता मिलेगी। इसी प्रकार परमात्मा के पास जायेंगे तो हमें आनन्द की प्राप्ति होगी। क्योंकि परमपिता परमात्मा आनन्द स्वरूप है।

संसार की बातों में राग, द्वेष, भय, शोक, ईर्ष्या, भय, ग्लानि, घृणा होती है। परमात्मा की बातों से उदारता, नम्रता, प्रसन्नता, भक्ति तथा अमृत रस की प्राप्ति होती है। इसे आप एक दृष्टान्त से समझ सकते हैं-

बहुत दिनों पहले की बात है कि एक राजा ने अपने मन्त्री से कहा-मुझे ऐसी युक्ति, ऐसा उपाय बताओ जिससे कि मैं सदा सुख में मग्न हो जाऊं। मन्त्री ने कहा-मैं ऐसी कोई युक्ति, उपाय नहीं जानता। मन्त्री ने पूरे राज्य में ढिंढोरा पिटवा दिया कि जो भी व्यक्ति सदा मस्त रहने वाली युक्ति या उपाय जानता हो, वह हमें सूचित करे, राज्य की ओर से पारितोषिक दिया जायेगा। काफी समय तक कोई व्यक्ति आगे नहीं आया। कुछ दिनों के पश्चात् राजा अपने राज्य में घूमता हुए एक साधु बाबा के पास पहुंचा। राजा ने सोचा-सदा मस्त रहने वाली युक्ति या उपाय इस साधु बाबा से पूछनी चाहिए। अतः राजा ने सन्त से पूछा-महाराज। मुझे कोई ऐसा उपाय बताइये, कि मैं सदा सुखी रहूं। अभी तो मुझे कोई कष्ट नहीं है। परन्तु भय लगता है कि कहीं राज्य छूट न जाये। बाबा जी कुछ ऐसी कृपा करो कि यह भाग्य सदा ही ऐसा रहे।

सन्त बड़े ज्ञानी थे। वह राजा की मनोदशा को भाँप गये। अपनी कुटिया के अन्दर गये। दो कागजों पर कुछ लिखा और उन दोनों कागजों को राजा को देते

हुए बोले कि जब तुम अपने आप को बहुत सुखी अनुभव कर रहे हो, पूरी तरह निश्चिन्त हो, अपने आप को सौभाग्यशाली मानो तब कागज न. 1 को पढ़ लेना और जब अपने आप को बहुत दुःखी मानो, चारों ओर अन्धेरा दिखाई दे रहा हो, तब इस कागज न. 2 को पढ़ लेना। परन्तु ध्यान रखना इन दोनों कागजों को केवल अत्यधिक सुख और अत्यधिक दुःख के समय ही पढ़ना और इन दोनों कागजों को सुरक्षित रख लेना। यह दोनों कागज लेकर राजा महल के अन्दर चला गया और उसे अपनी तिजोरी में बन्दर करके रख दिया।

कुछ दिन व्यतीत हो गये। प्रत्येक प्रकार का सुख राजा को मिल रहा था। पत्नियों का सहयोग मिल रहा था, मन्त्री, सेनापति आज्ञा के अनुसार चल रहे थे। राज्य में धन धान्य की कमी नहीं थी। उसने अनुभव किया कि मैं बहुत सौभाग्यशाली व्यक्ति हूँ। चलो आज उस बाबा जी द्वारा दिया गया कागज न. 1 निकाला और पढ़ा। उस में लिखा था 'आखिर कब तक'। जब राजा आनन्द में था तब भी साधु बाबा ने कागज पर लिखा 'आखिर कब तक' और आज राजा बहुत अधिक दुःखी है तब भी लिखा है 'आखिर कब तक'। यह पढ़ते ही राजा का चित्त शान्त हो गया। हमारी भी स्थिति लगभग ऐसी ही रहती है। हम भी अपने जीवन में लेते-देते, खाते-पीते, हंसते-रोते, यह विचार करें कि 'आखिर कब तक' तो हमारे लिए इन जंजालों से मुक्ति पाना सरल हो जायेगा। भाग्यशाली हैं वे लोग जो संतो के ऐसे वचनों को समझ पाते हैं।

महर्षि पतंजलि ने योगदर्शन के प्रथम पाद के 33वें सूत्र में हमें सुख-दुःख में कैसे रहना चाहिए उसका वर्णन किया है—**“मैत्रीकरुणामुदितोपेक्षाणां सुखदुःखपुण्यापुण्यविषयाणां भावनातश्चित्त प्रसादनम्”**

सुखी और ऐश्वर्य सम्पन्न सभी प्राणियों के प्रति मित्रता की भावना करें, दुःखी प्राणियों के प्रति दया की भावना करें, पुण्यात्माओं के प्रति हर्ष की भावना करें और पाप करने वालों के प्रति उपेक्षा करें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने ऋग्वेदभाष्यभूमिका में इस सूत्र का वर्णन इस प्रकार किया है—

इस संसार में जितने मनुष्य आदि प्राणी सुखी हैं, उन सबके साथ मित्रता करना। दुःखियों पर कृपा दृष्टि रखना। पुण्यात्माओं के साथ प्रसन्नता और पापियों के साथ न प्रीति, न वैर रखना। इस प्रकार से वर्तमान से उपासक के आत्मा में सत्यधर्म का प्रकाश और उसका मन स्थिरता को प्राप्त होता है।

समाज में रहते हुए सुःखी, दुःखी पुण्यात्मा, पापात्मा, मित्र व शत्रु आदि सब प्रकार के मनुष्यों से सम्पर्क होता रहता है। सामान्य जनों में यह प्रवृत्ति देखी जाती है कि वे अनुकूल व्यक्तियों से राग, प्रतिकूल व्यक्तियों से द्वेष, सुखी व्यक्तियों को देखकर ईर्ष्या, दुःखी व्यक्तियों को देखकर घृणा भावादि करते रहते हैं। ये सभी रागादि युक्त भावनायें चित्त को विक्षिप्त व मलीन करने वाली होती हैं। यदि हम ईश्वर के सच्चे पुत्र बनना चाहते हैं तो लोक में जो सुखी प्राणी हैं उनसे ईर्ष्या न करके मित्रता करनी चाहिए, दुःखी प्राणियों से घृणा न करके उनके प्रति करुणा, दया भावना रखना चाहिए। उनके प्रति हार्दिक सद्भावना सदा रखें क्योंकि उनके दुःख दूर करने का उपाय करने व सन्मार्ग बताने से चित्त में शान्ति भाव बना रहता है और इसी प्रकार जो पुण्यात्मा हैं, उनके प्रति हर्ष भावना तथा पापात्माओं के प्रति उपेक्षा-भाव सदा रखें। जो पापी व्यक्ति होते हैं, उनको सन्मार्ग पर चलाने की बात कहनी चाहिए परन्तु यह भी ध्यान रखना चाहिए कि वे शत्रुतावश बाधक न बन जायें। इस प्रकार से लौकिक व्यवहार करने से हमारा चित्त स्वच्छ व शान्त रहेगा।

जीवन का जो भी समय शेष है, उसी का हमें सदुपयोग करना होगा। सावधान होकर प्रभु की प्राप्ति के लिए कटिबद्ध रहना होगा। प्रभु को प्राप्त करने के लिए जिन-जिन साधनों की हमें आवश्यकता है, वह सब प्रभु कृपा से हमें प्राप्त हैं। प्रभु के दिए हुए साधनों और पदार्थों को हमें सदुपयोग करना है। वही व्यक्ति मानवजीवन के सर्वोच्च लक्ष्य की प्राप्ति कर लेता है जो प्रभु के दिए हुए साधनों का सदुपयोग करता है और जो दुरुपयोग करता है। उसका पतन निश्चित है। यदि हम सदुपयोग करेंगे तो मानव से उच्चकोटि की योनियों (यथा देवता, ऋषि) को प्राप्त करेंगे। दुरुपयोग करने पर निम्न योनियों (यथा पशु, पक्षी, जलचर, नभचर) को प्राप्त होंगे।

मन, बुद्धि, इन्द्रियों का संयम करके उनको संसार के विषय भोगों से हटाकर परमात्मा में लगा देना उसका सदुपयोग करना है और उसके विरुद्ध निद्रा, आलस्य, प्रमाद, पाप और विषय भोगों में लगाना दुरुपयोग है। परमपिता परमात्मा ने हमें बुद्धि और विवेक दिया है यदि हम इनके होते हुए भी इनका उचित उपयोग न करें तो हमारी मूर्खता होगी।

यह मानव चोला न जाने कितनी योनियों के बाद प्राप्त हुआ है, ऐसा अवसर बार-बार नहीं मिलेगा। अतः हमारी बुद्धिमत्ता यही है कि बुद्धि और विवेक का प्रयोग करते हुए, उचित और अनुचित का विचार करते हुए अपने जीवन को सेवा, स्वाध्याय, साधना, और समर्पण में लगायें ताकि मानव जीवन सार्थक हो सके।
- संजीवनी से साभार

आत्म शुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य

1. श्रीमती इन्दुपुरी जे.के. मेमोरियल ट्रस्ट मोगा, पंजाब
2. चौ नफेसिंह जी राठी पूर्व विधायक क्षेत्र बहादुरगढ़, हरि
3. श्री वीरसेन जी मुखी कीर्तिनगर, दिल्ली
4. श्री बलजीत सिंह जी उपाध्यक्ष किसान मोर्चा भाजपा दिल्ली प्रदेश, नजफगढ़
5. आचार्य यशपाल जी कन्या गुरुकुल खरखोदा, हरि.
6. श्री हरि सिंह जी सैनी, प्रधान आर्य समाज, हिसार
7. पंडित राम दर्शन शर्मा, महावीर पार्क, बहादुरगढ़
8. श्री सत्यपाल जी वत्स काष्ठ मण्डी, बहादुरगढ़
9. श्री जयकिशन जी गहलौत, नजफगढ़, दिल्ली
10. श्री रमेश कुमार राठी, ७ विश्वा, जटवाड़ा मो, बहादुरगढ़
11. श्री जे.आर. वरमानी, गुडगाँव, हरियाणा
12. श्रीमती. नीतू गर्ग, ईशान इंस्टीट्यूट, ग्रेटर नोएडा
13. श्री रामवीर जी आर्य, सै. ६, बहादुरगढ़
14. श्री जितेंद्र कुमार जी आर्य, सूरत, गुजरात
15. श्री राव हरिश्चन्द्र जी आर्य, नागपुर
16. श्री ओम्प्रकाश आर्य, आर्यसमाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली
17. श्री देव प्रकाश जी पाहवा, राजौरी गार्डन, दिल्ली
18. श्री जयदेव जी हसीजा 'प्रेमी' वानप्रस्थी, गुडगाँव
19. स्वामी वेदरक्षानन्द जी सरस्वती, आर्य गुरुकुल कालवा
20. रविन्द्र कुमार आर्य-सैक्टर ६, बहादुरगढ़
21. नेहा भटनागर, सुपुत्र सुरेश भटनागर, तिलकनगर, फिरोजाबाद
22. अमित कौशिक, सु श्री महावरी कौशिक, मलिक कॉलोनी, सोनीपत
23. सरस्वती सुपुत्र वे.के. ठाकुर, न्यू सिया लाईन लखनऊ (उ.प्र.)
24. दीपक कुमार, सुपुत्र श्री भगवान् गिरि, बोकारो, झारखण्ड
25. कृष्णा दियोरी भरेली, सु श्री शैलेन्द्र नाथ दियोरी, गोहाटी, असम
26. रवि कुमार जायसवाल, सुपुत्र श्री आर.एस. जायसवाल, गोपालगंज, बिहार
27. श्री सुरेश कौशिक, मॉडल टाउन, बहादुरगढ़
28. श्री गौरव, सु. श्री कामेश्वर प्रसाद, हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना
29. श्री परमजीत सिंह, सुपुत्र सरदार गुरनाम सिंह, दसुआ (पंजाब)
30. श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंघल, शक्ति विहार, दिल्ली
31. श्री प्रेम कुमार जी गर्ग, दनकौर (उ.प्र.)
32. श्री ओम्प्रकाश जी अग्रवाल, ईशान इंस्टीट्यूट, नोएडा
33. कु. शिखा सिंह, सु. श्री सीपीसिंह, सुभाष नगर, हरदोई उ.प्र.
34. कु. नेहाराज, सु. श्री राजन कुमार, बाकरगंज पटना (बिहार)

35. कु. गितिका, सु. श्री प्रमोद शुक्ला, आजादनगर हरदोई उ.प्र.
36. कु. विदिशा, सु. श्री राजकमल स्तोत्री, इन्दिरा चौक बदायूं उ.प्र.
37. श्री मनोज, सु. श्री जे.एस.विस्ट, पूर्वी ग्रेटर कैलाश दिल्ली
38. कु. सविता, सु. रमेश चन्द्र यादव, रानीबाजार, सहारनपुर
39. श्री हर्ष कुमार भनवाला, सैक्टर-1, रोहतक (हरि.)
40. श्री ईश्वरसिंह यादव, गुडगाँव, हरियाणा
41. श्री वेदपाल जी आर्य, महावीर पार्क, बहादुरगढ़
42. श्री बलवान सिंह सोलंकी, शक्तिनगर, बहादुरगढ़
43. मा. हरिश्चन्द्र जी आर्य, टीकरी कलां, दिल्ली
44. श्री सोहनलाल जी मनचन्दा, शिवाजीनगर, गुडगाँव
45. श्री स्वदीप दास गुप्ता, जमशेदपुर, झारखण्ड
46. श्री अजयभान सिंह यादव, कानपुर, उ.प्र.
47. श्री अजयभान यादव, कानपुर सिटी, उ.प्र.
48. श्री नरेश कौशिक विधायक, बहादुरगढ़
49. श्री देवीदयाल जी गर्ग, पंजाबीबाग, नई दिल्ली
50. श्री आर.के. बेरवाल, रोहिणी, नई दिल्ली
51. पं. नत्थूराम जी शर्मा, गुरुनानक कॉलोनी बहादुरगढ़
52. श्री आर.के. सैनी, हसनगढ़, रोहतक
53. श्री राजकुमार अग्रवाल, मुल्तान नगर, दिल्ली
54. श्रीमती कुसुमलता गर्ग, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
55. श्री बलवान सिंह, साल्हावास, झज्जर
56. श्री अजीत चौहान, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली
57. यज्ञ समिति झज्जर
58. श्री उममेद सिंह डरोलिया, काठमण्डी, बहादुरगढ़
59. श्री अम्बरीश झाम्ब, गुडगाँव, हरियाणा
60. श्री गणेश दास एवं श्रीमती गरिमा गोयल, नया बाजार, दिल्ली
61. श्री राजेश आर्य, शिवाजी नगर, गुडगाँव
62. मास्टर प्रहलाद सिंह गुप्ता, रोशन पुरा, गुडगाँव, (हरियाणा)
63. श्री राजेश जी जून्, उपचेयरमैन, जिला परिषद झज्जर
64. श्री अनिल जी मलिक, पूर्व उपाध्यक्ष, टीचर कॉलोनी बहादुरगढ़
65. द शिव टर्बो ट्रक यूनिट, बादली रोड, बहादुरगढ़
66. श्री राधेश्याम आर्य, रामनगर, त्रिनगर, दिल्ली
67. सुपरिटेन्डेंट नाहर सिंह, बिजवासन, दिल्ली
68. श्री राम प्रकाश गुप्ता व श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता, नजफगढ़
69. श्री नकुल शौकीन, सैक्टर-23, गुडगाँव
70. श्री अपूर्व कुमार पुत्र श्री अम्बरीश झाम, हैरीटेज सिटी, डी.एल.एफ-2, गुडगाँव
71. श्रीमती सुशीला गुप्ता पत्नी श्री शत्रुघ्न गुप्ता, रांची झारखण्ड

पेचिस (प्रवाहिका)

- प्रस्तुति विक्रम देवशास्त्री

आयुर्वेद ग्रंथों के अनुसार प्रवाहिका में भी अतिसार की भाँति रोगी को बार-बार मल त्याग करने के लिए जाना पड़ता है। रोगी को पानी जैसे पतले दस्त होते हैं, पेट में तीव्र पीड़ा होती है, मरोड़ उठते हैं। एक ही दिन में यह रोगी के शरीर को इस बदर तोड़ देता है कि वह स्वयं को काफी दुर्बल महसूस करता है। पानी जैसे पतले दस्त होने के कारण रोगी के शरीर में पानी की बेहद कमी हो जाती है।

कारण एवं लक्षण

कारण-दूषित जल पीने एवं दूषित तथा बासी भोजन करने से उनके जीवाणु शरीर में पहुँचकर इस रोग की उत्पत्ति करते हैं।

लक्षण- यह एक संक्रामक रोग है। जल एवं भोजन में उत्पन्न जीवाणु बरसात एवं ग्रीष्मऋतु में मक्खियों के माध्यम से बिना ढके रखे भोजन एवं बर्तनों तक पहुँच जाते हैं। जब कोई स्वस्थ व्यक्ति उस भोजन, जल एवं उन बर्तनों का इस्तेमाल करता है तो वह इस रोग की चपेट में आ जाता है। इस रोग के जीवाणु पेट में पहुँचकर आंतों में जखम पैदा कर देते हैं जिससे स्वस्थ व्यक्ति भी इस रोग का शिकार हो जाता है। इससे रोगी के सिर में दर्द होता है, पिडलियों में तीव्र पीड़ा एवं ऐठन महसूस होती है। पेट में बार-बार ऐठन और मरोड़ होने से रोगी परेशान हो जाता है। पानी पीते ही शौच की शिकायत हो जाती है जिससे रोगी प्यास होने के बावजूद पानी पीने से कतराता है। रोगी को प्यास बहुत लगती है और रोगी की जीभ शुष्क हो जाती है, प्यास के मारे गले में कांटे से चुभते महसूस होते हैं। इस रोग में यदि चिकित्सा में विलम्ब किया जाए तो रोगी को अतिसार के साथ मल गिरने की शिकायत भी हो जाती है।

प्रवाहिका की चिकित्सा

- कुटजारिष्ट 10 से 20 मिलीलीटर की मात्रा लेकर इसमें बराबर का पानी मिलाकर रोगी को भोजन के बाद सेवन कराएं। इससे प्रवाहिका में बहुत लाभ होता है।
- स्वर्ण बटी 10 मि. ग्राम की मात्रा में शहद के

साथ दिन में दो बार सेवन करने से पेचिस में आंतों से आने वाला रक्तस्राव बंद होता है।

- लवणभास्कर चूर्ण 3 से 4 ग्राम की मात्रा में मट्ठे के साथ सेवन करने से पेचिस में बहुत लाभ होता है।
- कर्पूर रस की 1 गोली प्रातः व 1 गोली सायंकाल में ताजे पानी या अनार के रस के साथ सेवन करने से पेचिस में लाभ होता है।
- सिद्धप्राणेश्वर रस की 2 गोलियां पीसकर चार-चार घंटे के अन्तरात पर शहद और पान के पत्ते के रस के साथ सेवन करके ऊपर से हल्का गरम पानी पीने से पेचिस से उत्पन्न ऐठन व मरोड़ की पीड़ा नष्ट होती है।
- हिंवाष्टक चूर्ण 2 से 3 ग्राम की मात्रा में लेकर दिन में 2-3 बार जल के साथ सेवन करें। पेचिस का प्रकोप कम होता है और रोगी को राहत मिलती है।
- अनार के छिलके 25 ग्राम और कुटज की छाल 25 ग्राम दोनों को कूटकर पानी में उबालकर काढ़ा बनाएं। इस काढ़े को छानकर रोगी को दिन में 2-3 बार देने से पेचिस में बहुत लाभ होता है।
- अनारदाना, भुना हुआ जीरा, लौंग, सोंठ और सौंफ सभी चीजें 25-25 ग्राम की मात्रा में लें और इनहें कूट-पीसकर एवं कपड़छन करके बारीक चूर्ण बना लें। 5-5 ग्राम चूर्ण रोगी को मट्ठे के साथ दिन में कई बार सेवन कराएं। इससे पेचिस रोग नष्ट होता है।
- जातिफलादि बटी की एक-एक गोली रोगी को प्रातः सायं मट्ठे के साथ दें। इससे न केवल पेचिस में लाभ होता है बल्कि मल के साथ आंव आने, मल त्यागने पर पेट में मरोड़ उठने, पेट का भारीपन और अपच जैसी विकृतियां भी नष्ट होती हैं।
- हरड़ के छिलके, मरोड़फली, सोंठ और सेंधानमक, सभी 15-15 ग्राम की मात्रा में लेकर कूट-पीसकर

बारीक चूर्ण बना लें। रोगी को 5-5 ग्राम चूर्ण हल्के गरम पानी के साथ दें।

- आम की गुठली की गिरी को छाया में सुखाकर बारीक चूर्ण बना लें। इस चूर्ण के बराबर की मात्रा में जामुन की गुठलियों को सुखाकर उनका भी चूर्ण बना लें। इन दोनों प्रकार के चूर्ण को मिला लें। 5-5 ग्राम मात्रा में यह चूर्ण हल्के गरम पानी के साथ ले जिससे पेचिस नष्ट होता है।
- चित्रकादि बटी की 1 या दो गोली पानी के साथ सेवन करने से पेचिस में बहुत लाभ होता है। यह गोली रोगी को प्रातः एवं सायं दो बार भोजनोपरान्त सेवन करनी चाहिए। इससे आंव की उत्तपत्ति नहीं होती एवं पाचन-क्रिया भी प्रबल होती है।
- दाडिमावलेह 10 से 20 ग्राम की मात्रा में मट्ठे के साथ भोजन से पहले सेवन करने से पेचिस में बहुत लाभ होता है। दाडिम अनार को कहा जाता है।
- कूटजघन बटी की 2 से 4 गोली दिन में 3-4 बार ताजे पानी के साथ रोगी को सेवन कराएं।
- सोंठ को पानी में देर तक उबालकर काढ़ा बनाएं। इस काढ़े का रोगी को प्रातः सायं दो बार सेवन कराएं। इससे पेचिस में बहुत लाभ होता है।
- 100 मिलीलीटर बकरी के दूध में 10 ग्राम बेलगिरी और 200 मिलीलीटर पानी मिलाकर आंच पर चढ़ा दें और खूब उबलने दें। जब सारा पानी जल जाए और बकरी का दूध ही शेष बचे तो इस काढ़े को छान लें और मिश्री मिलाकर रोगी को सेवन कराएं।
- गंगाधर चूर्ण की 1-1/2 से 3 ग्राम की मात्रा लेकर रोगी को शहद के साथ चटाकर ऊपर से चावलों का धोवन पिलाने से प्रवाहिक रोग में बहुत लाभ होता है।

सावधानी एवं खान-पान

प्रवाहिका रोग में रोगी को बड़ी सावधानी बर्तनी चाहिए। रोगी के तिमारदारों को चाहिए कि उसे पानी उबालकर दें। कीटाणयुक्त एवं दूषित जल पीने से इस रोग में बढ़ोत्तरी होती है। बरसात के

दिनों में इस रोग का प्रकोप अधिक होता है। अतः ऐसे में फल एवं सब्जियों को भी काटने से पहले अच्छी तरह धो लेना चाहिए। बरसात में पत्तेदार सब्जियों में कीड़े लग जाते हैं जो नंगी आंखों से दिखाई नहीं देते लेकिन भोजन के साथ शरीर में पहुंचकर संक्रमण फैलाते हैं।

पेचिस होने पर रोगी को गरम पेय पदार्थों तथा चाय-काफी आदि से यथासंभव परहेज करना चाहिए। बाजार में बिकने वाले फास्ट-फूड आदि भी नहीं खाने चाहिए। अधिक घी तेल ओर मिर्च-मसाले वाले पदार्थ भी इस रोग को बढ़ाने में मददगार साबित होते हैं। आलू, गोभी, बैंगन और उड़द की दाल का सेवन भी रोगी को नहीं करना चाहिए।

रोगी को बेलगिरी ओर अनार का सेवन कराना चाहिए। दही और मट्ठा भी इस रोगी में बहुत लाभ पहुंचाते हैं, लेकिन ये खट्टे नहीं होने चाहिए। न ही दही की मीठी लस्सी का सेवन करना चाहिए। मट्ठे या दही में भुना हुआ जीरा और पुदीने का चूर्ण डालकर सेवन करने से काफी लाभ होता है। खाने में रोगी को बेहद हल्का और सुपाच्य भोजन करना चाहिए। मूंग की दाल की खिचड़ी, पतली दाल के साथ बिना घी लगे फुलके एवं दलिया आदि रोगी को लाभ पहुंचाते हैं। दही और चावल के सेवन से भी रोगी को लाभ होता है।

आनन्दपूर्ण जीवन हेतु

दुःख, अशान्ति, तनाव, वैमनस्य आदि भावों को रूपान्तरित कर सुख शान्ति, प्रेम करुणा एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण, मानसिक दुर्भावनाओं से निर्जरा स्वयं के व्यक्तित्व का सम्यक् विकास और जीवन को आह्लादपूर्ण बनाने वाली मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया द्वारा लाभान्वित होने के लिए आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ जिला झज्जर, हरियाणा में आप सादर आमन्त्रित हैं।

—राजहंस मैत्रेय, मो. 9813754084

स्वास्थ्य चालीसा

- प्रस्तुति कर्ण आर्य

1. सुबह सूर्योदय के पहले उठें व पूरे शरीर से अंगड़ाई लें।
2. उठते ही मुस्कुरायें व सूर्य भगवान का दर्शन करें।
3. ईश नमन के बाद ताँबे के बर्तन में रात्रि में रखा पानी पीयें।
4. दुधपेस्ट की बजाय नीम या सरसों व नमक से दाँत साफ करें।
5. चाय की जगह गरम पानी के साथ नींबू का उपयोग करें।
6. आवश्यकता हो तो डिप वाली चाय को कम उबालकर ही पीयें।
7. प्रातः आधा घण्टा ताजी हवा में टहलने के लिए जायें।
8. आधा घण्टा आसन, प्राणायाम व प्रभु का स्मरण अवश्य करें।
9. प्रातः काल आधा घंटा टी.वी. में सत्संग का प्रोग्राम जरूर देखें।
10. स्नान करते समय सूखी मालिश करें व पैर का तलवा रगड़ें।
11. शेंपू, साबुन की बजाय मुलतानी मिट्टी या दूध व बेसन काम लें।
12. सौन्दर्य प्रसाधन का इस्तेमाल कम से कम करें।
13. ज्यादा से ज्यादा सूती व आरामदेह कपड़ों का इस्तेमाल करें।
14. नाश्ते में जूस, फल या अंकुरित सलाद का ही सेवन करें।
15. भोजन करते वक्त टी.वी. न देखें, न किसी से बातचीत करें।
16. जहाँ तक संभव हो, भोजन अकेले ही करने की आदत बना लें।
17. भोजन में सूप व सलाद की ज्यादा से ज्यादा प्रयोग करें।
18. एक साथ ज्यादा खाने की बजाय थोड़ा-थोड़ा करके खायें।
19. भोजन धीरे-धीरे चबा-चबा कर शान्ति व प्रसन्न मन से खायें।
20. भोजन करने के बाद अगर हो सके तो गरम पानी पीयें।
21. ज्यादातर रोगों का कारण कब्ज व तनाव है, इनसे बचें।
22. रात को जहाँ तक संभव हो, हल्का भोजन करने की आदत रखें।
23. टी.वी. जब भी देखें तो आप वज्रासन या भुजंगासन में ही देखें।
24. सदैव प्रसन्नचित्त, हँसमुख, व्यस्त एवं तनाव मुक्त रहें।
25. अंग्रेजी दवाईयों का कम से कम इस्तेमाल करें।
26. सप्ताह में कम से कम एक उपवास अवश्य रखें।
27. अगर हो सके तो रात को दस बजे तक अवश्य सो जाएँ।
28. आरामदेह सोफे व कुर्सियों पर बैठने की आदत कम करें।
29. जुखाम, खाँसी, सर्दी व बुखार में गर्म पानी ज्यादा से ज्यादा पीयें।
30. एक दिन में औसतन 10-12 गिलास पानी जरूर पीना चाहिए।
31. भोजन, शौच व बैठने में भारतीय पद्धति का उपयोग करें।
32. पीने के लिए फ्रिज का ठण्डा पानी उपयोग में कम लें।
33. शाम का भोजन व सोने में 3 घंटे का अन्तराल अवश्य रखें।
34. भोजन आधा पेट, पानी चौथाई पेट व शेष पेट खाली रखें।
35. रात को सोने से पहले दिनचर्या के बारे में 5 मिनट विचार करें।
36. ड्रग्स, गुटखा, सिगरेट, मांसाहार व शराब से परहेज करें।
37. चोकरयुक्त आटा व बिना पॉलिश किये चावल का इस्तेमाल करें।
38. साल में दस दिन किसी प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र में स्वास्थ्य लाभ जरूर लें।
39. फास्ट फूड, शक्कर, मैदा, चाय, कॉफी व कोल्ड ड्रिंक्स का प्रयोग कम करें।
40. जल, वायु, आकाश, पृथ्वी एवं सूर्य इन पाँच तत्वों से बने शरीर में संतुलन रखें।

हंसो और हंसाओ

- रवि शास्त्री

- पप्पु दारू पी के ताला खोलने लगा। हाथ कांपने की वजह से ताला नहीं खुला।
चप्पु-चाबी मुझे दे मैं खोल दूंगा।
पप्पु-खोल तो मैं खुद लुंगा तू घर को पकड़ बहुत ज्यादा हिल रहा है।
- शिक्षक ने कक्षा में पूछा सीनियर और जुनियर में क्या फर्क है। संता ने हाथ खड़ा किया।
संता-सर जो समुद्र के पास रहता है वो सीनियर और जो चिड़िया घर के पास रहता है वो जुनियर।
- टीचर ने सुरेश से पूछा-तुमने कभी कोई नए काम किया है।
सुरेश-हाँ सर एक बुजुर्ग पैरों में तकलीफ की वजह से धीरे-धीरे घर जा रहे थे मैंने एक कुत्ता पीछे लगा दिया जल्दी घर पहुँचे गये।
- एक आदमी ने कंडेक्टर से पूछा-“आप कितने घंटे बस में रहते हो?”
कंडेक्टर-24 घंटे
आदमी-वो कैसे
कंडेक्टर-देखिये 8 घंटे डी.टी.सी. बस में रहता हूँ और बाकी 16 घंटे बीवी की बस में रहता हूँ।
- भोपू एक पहलवान से-तुम कितने आदमियों को उठा लेते हो।
पहलवान-10 15
भोपू-तुमसे अच्छा तो मेरा मुर्गा है सुबह-सुबह सारे मोहल्ले को उठा देता है।

आत्मबोध मानव जीवन को आन्तरिक रूप से ही नहीं अपितु बाह्य रूप से भी सौन्दर्यपूर्ण बनाता है और मानव जीवन का अन्तिम गौरव प्रकट होता है।
-राजहंस मैत्रेय

ईर्ष्या

-श्रीमती सुदेश सन्दूजा

गुणों के रहते हुए भी दोषों को ढूँढने का नाम “ईर्ष्या” है। ईर्ष्या गुणों को ग्रहण नहीं करने देती। वह हृदय की श्रुद्रता प्रकट करती है। यदि काँच का प्याला हाथ से गिर जाए तो उसके टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं, इसी तरह ईर्ष्या भी प्रेम के टुकड़े-टुकड़े कर डालती है। मनुष्य यदि दुःखी को देखकर दुःखी हो जाता है तो समझा जाता है कि उसके हृदय में करुणा का गुण मौजूद है लेकिन यदि वह सुखी को देखकर दुःखी होता है तो समझ लेना चाहिए कि उसके हृदय में ‘ईर्ष्या’ का दुर्गुण घर किए बैठा है। दूसरों के सुख को देख स्वयं सुख का अनुभव करने वाले महान होते हैं। ईर्ष्या की लपटें बड़ी भयंकर होती है। ‘ईर्ष्या’ वह काली नागिन है जो समस्त भूमंडल में अपनी जहरीली हवा फैलाती जाती है। आँख में गिरा हुआ रजगण केवल आँख को ही दुःख देता है किन्तु याद रहे, आँख में घुसी हुई ईर्ष्या आँख और दिल दोनों को तकलीफ पहुँचाती है। वह व्यक्ति कभी सुखी नहीं हो पाता जो अपने से अधिक सुखी को देखकर दुःखी होता है। ईर्ष्यालु स्वभाव वाले को दूसरों के गुण कड़वे लगते हैं। गुणियों के गुण सुनकर उसके मन में क्रोध उत्पन्न होता है। मनुष्य अपरिचित का उत्कर्ष देख सकता है पर अपने ही कुटुम्बीजन या मित्र का उत्कर्ष नहीं देख सकता। ईर्ष्यालु न स्वयं सुखी रह सकता है और न दूसरों का सुख देख सकता है। दूसरों की निन्दा करना और अपने मुँह अपनी प्रशंसा करना ही उसका काम होता है। ईर्ष्या वह बीमारी है जो अन्य सदगुणों को प्रनपने नहीं देती है। जो इससे बच कर रहता है वही जीवन सफल बना सकता है।

ईर्ष्या दुर्गुण है। हर इन्सान को यह देखना चाहिए कि उसके मन में इस नागिन ने बिल तो नहीं बना रखी है। याद रहे, हमारे हर अच्छे और बुरे कर्म को वह सर्वशक्तिमान परमात्मा हर समय निहार रहा है।

सामाजिक क्रान्ति के लिए ऋषि दयानन्द के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ें। -विक्रमदेव शास्त्री

मैं कौन हूँ?

मैं कौन हूँ मैं कहाँ से आया हूँ,
मैं किसलिये यहाँ पर आया हूँ।
मैं माँ के गर्भ से जब बाहर आया,
आकर खूब रोया चिल्लाया।

माँ ने मुझे था अपना दूध पिलाया,
बाप ने मुझे अपनी गोदी खिलाया।
फिर हर चीज को मैंने टटोलना सीखा,
तोतली जुबां से कुछ-कुछ बोलना सीखा।

बहन भाई कई मेरे रिश्तेदार बने,
पड़ोस के साथी कई मित्र यार बने।
घुटनों के बल चला फिर खड़ा होता गया,
मैं अहिस्ता-अहिस्ता ही बड़ा होता गया।

फिर मुझे स्कूल भेजा गया पढ़ने के लिए,
महत्त्वकांक्षा जगाई गई आगे बढ़ने के लिए।
पढ़ते-पढ़ते ही मैं तो जवान हो गया,
चाल में आई मस्ती सुल्तान हो गया।

फिर मैं यहाँ पे अपना कारोबार करने लगा,
खुद को भूल यश, पद स्वीकार करने लगा।
दिन-रात अपनी कल्पनायें साकार करने लगा,
फिर सगाई हुई दुल्हन का इंतजार करने लगा।

भारत चली बाजे बजे गीत गाये गये,
सब मित्र और रिश्तेदार बुलाये गये।
दुल्हन आ गई मैं गृहस्थी बन गया,
समाज की मैं एक हस्ती बन गया।

संसार के चक्कर में खुद को भूल गया,
धन कमा कोठी बना कर मैं फूल गया।
बच्चे हुए फिर अधेड़ अवस्था आ गई,
काले बालों की जगह सफेदी छा गई।

- डॉ. दर्शन लाल जी आजाद, पानीपत

बुढ़ापे के भय ही से तब मैं डरने लगा,
मन्दिर में जाकर पूजा पाठ करने लगा।
सभी मरते हैं एक दिन मैं भी मरूंगा,
मौत आई तो यह शरीर खाली करूंगा।

मेरी अर्थी भी इक दिन उठाई जायेगी,
चिता पे रखकर यह जलाई जायेगी।
मगर मरकर मैं फिर कहाँ जाऊंगा,
मैं कौन हूँ कब यह समझ पाऊंगा?

श्रद्धा व विवेक में विवाद

श्रद्धा व विवेक में एक बार संवाद हुआ,
अपनी अपनी ही बड़ाई पर विवाद हुआ।
श्रद्धा बोली कि हर दिल में राज है मेरा,
सबकी प्यारी हूँ मैं सारा समाज है मेरा।

भीड़ लगी रहती है सदा मेरे दरबार में,
पांव जमा लेती हूँ मैं सदा भरे बाजार में।
हर मन्दिर व हर तीर्थ में प्रदर्शन है मेरा,
खिंचें चले आते हैं इतना आकर्षण है मेरा।

यह पूजा, प्रार्थना, आरती उपासना करते हैं,
मेरा अवसर ले भगवान से याचना करते हैं।

सारे भक्त मेरी महिला के गीत गाते हैं,
श्रद्धा रख मुझमें, मुझसे प्रीत लगाते हैं।
मुझसे शक्ति, उत्साह धन व बल पाते हैं,
मेरी क पा से ही मेरे श्रद्धालु फल पाते हैं।

विवेक-माना की हर जगह तेरी हुकमरानी है,
यह सारी दुनिया ही तेरी दिवानी है।
सबको तुने अपना दास बना रखा है,
अपने मोह जाल में खूब फंसा रखा है।

अरी सुन तेरे नाम पे ठगी चलती है,
बिना विवेक यह सब अन्धी भक्ति है।

आर्य समाज नाम का विश्लेषण

- गंगा शरण आर्य

‘आर्यसमाज’ इस नाम में ‘समाज’ इस शब्द का अधिक महत्व है। इस शब्द में समाज उद्देश्य है। जिसकी एक जैसी सोच हो, जो समूह में रहकर एक दूसरे के दुःखों से परिचित हो और जो ऊँचा उठने की समझ रखता हो उसे समाज कहते हैं। सिर्फ समूह में रहने का नाम समाज नहीं, यों तो भेड़, बकरी और जंगली पशु भी समूह में रहते हैं उनके समूह को समाज नहीं कह सकते। आर्यसमाज की व्याख्या अधिकतर लोग यह करते हैं कि आर्यों का समाज-आर्य समाज। मैं इस व्याख्या से सहमत नहीं हूँ मैं तो यह कहने में तत्पर हूँ कि जो समाज के हित के लिए स्वयं को समर्पित कर देते हैं ऐसे लोगों का समाज ही ‘आर्यसमाज’ है। आर्य शब्द गुणवाचक होने से समाज इस शब्द के पश्चात् इसका महत्व है। अगर समाज को हम गौण स्थान देंगे तो हमारा उद्देश्य खत्म हो जाएगा। अगर यह जन्म वाचक होता तो यह व्याख्या उचित होती लेकिन आर्य बनने की निरन्तर प्रक्रिया के कारण ‘आर्यसमाज’ नाम रखने में ‘समाज’ को प्रधानता दी गई है। अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि जो व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिए दिन रात प्रयत्न करता है, ऐसे व्यक्तियों का समूह ही ‘आर्यसमाज’ है। यह ऐतिहासिक सत्य है कि आर्यसमाज हमेशा समाज हित के लिए संघर्षरत रहा है। आर्य हमेशा समाज के भविष्य के प्रति सजग रहे हैं। आर्य चाहे वह आर्यवर्त के काल का हो अथवा उन्नीसवीं सदी का हो वह हमेशा राष्ट्र, समाज और मानवता के प्रति जागरूक रहा है।

आर्य शब्द गतिशीलता का द्योतक:

आर्य शब्द गति अर्थ से ही प्रयुक्त है। जिसमें गतिशीलता है वही आर्य है। जो सन्तुष्ट होकर बैठ जाए उसे आर्य नहीं कह सकते, और जो समाज के भविष्य के प्रति सजग है वही आर्य कहलाने योग्य है। आर्य अतीत से प्रेरणा लेकर भविष्य का निर्माण करता है, ऐसा युवक कभी पीछे मुड़कर नहीं देखता। आज हमने अपने आपको आर्य नाम दिया है

लेकिन हम आगे नहीं देखते सर्वदा पीछे की ओर देखते रहते हैं। हमने हमेशा अतीत की आवभगत की है, लेकिन भविष्य की भव्यता के चित्र नहीं खींचें।

प्रारम्भिक पीढ़ी:

‘आर्यसमाज’ के प्रारम्भिक पचास वर्षों का अनुयायी वर्ग संगठन की सोच में स्वयं को ढालकर समाज की बुराईयों से लड़ता था। स्वयं को समाज के लिए समर्पित कर अपने जीवन की आहुति बनाकर स्वाहा करता था। ‘अत्यन्त इधम आत्मा’ के मन्त्रों से अपनी आत्मा की समिधा बनाकर सामाजिक यज्ञाग्नि में आहुति देता रहा था। उनके सामने ‘स्व’ का कोई महत्व नहीं था न अपनी सोच का।

‘आर्य समाज’ की प्रारम्भिक पीढ़ी ने समाज की सर्वोन्नति के लिए कार्य किया था, समाज की भव्यता के स्वप्न देखे थे। उनके विचारों में समाज का चित्र भव्यता से पूर्ण था इसके लिए उन्होंने कष्ट सहे, यातनाएँ सहੀं और मृत्यु का आलिङ्गन किया। स्वयं के अस्तित्व को नजर अन्दाज करते हुए समष्टि के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन समाज रूपी हवनकुण्ड में झोंक दिया। क्या पंडित लेखराम, क्या श्रद्धानन्द, क्या दर्शनानन्द और क्या गुरुदत्त आदि रात दिन एक दीपक की लौ की तरह जलते हुए औरों को प्रकाशित करते रहे। स्वयं को देदीप्यमान रखते हुए औरों को उजाला देते रहे। अपने आप को क्षीण करते हुए समाज को बलवान बनाते रहे। उनके जहन में रात-दिन एक ही तड़प, एक ही सोच थी इस जर्जर समाज को किस तरह सुसंगठित किया जाए। अतः यह निःसन्देह कहा जा सकता है कि आर्यसमाज का प्रारम्भिक अनुयायी वर्ग अपने लिए न जीकर समाज और राष्ट्र के लिए जीता था। उनकी यह सोच थी कि मेरा अस्तित्व समाज के बगैर कुछ नहीं है फिर मैं क्यों न समाज की उन्नति के लिए जीऊँ।

अतीत से मोह:

जो समाज अपने कारनामों में ही मशगूल रहता है

और केवल अपने किए हुए कार्यों से ही मोहित रहता है वह समाज अधिक दिन तक स्थिर नहीं रह सकता। अनेक संस्थाओं के झंझावातों में वह उखड़ जाता है। राष्ट्र के नव निर्माण और सामाजिक उन्नति को नजर अंदाज कर केवल अतीत की लोरियों से किसी संस्था की उन्नति नहीं होती। आज के कार्यकर्ता अथवा नेता पुराने तराने छेड़कर अपने कार्य की इति श्री समझ लेते हैं, इससे लोगों का क्या भला होने वाला है? एक जमाना था जब आर्य नेता आगे चलते थे तो लोगों का कारवां पीछे-पीछे साथ देता था। उनकी दृष्टि आगे देखने की थी, वे कभी पीछे मुड़कर नहीं देखते थे, चाहे वह हिन्दी सत्याग्रह हो या आर्य सत्याग्रह हैदराबाद हो अथवा स्वतन्त्रता आन्दोलन हो या गो रक्षा के लिए किए गए आन्दोलन हो, लोग आर्य नेताओं के आदेश की आतुरता से राह देखते थे।

आम आदमी की मानसिकता यह है कि कोई संस्था, समाज या राष्ट्र के लिए क्या कर सकती है? यदि आम आदमी की दृष्टि में वह संस्था निष्क्रिय है तो वह आम आदमी दूसरी संस्थाओं की तरफ आकर्षित हो जाता है। आज का युवावर्ग किसी संस्था की चार दिवारी में कैद होकर बैठने की मनः स्थिति में नहीं है। यदि आप उसके हाथ में जबरदस्ती माला दोगे तो वह माला तोड़कर भाग निकलेगा। आप जोर देकर हवन पर बिठायेंगे तो वह अगले दिन गायब हो जाएगा। वह इस आशा से आर्यसमाज में आता है कि उसे कुछ करने के लिए, लोगों के हितों के लिए, कोई कार्यक्रम या जिम्मेदारी दी जाएगी और उसे वह दी नहीं जाती तो वह अगली बार कन्नी काट लेगा। युक्ति और उक्ति से बढ़कर कृति है, युवा वर्ग कृति करना चाहता है और कृति देखना चाहता है। आर्यसमाज एक बहुमुखी संस्था है जिसमें आत्मोन्नति और सामाजिक उन्नति का समान अवसर प्रदान किया जाता है। जहां अतीत के आदर्शों को सामने रखकर भविष्य का भवन खड़ा किया जाता है। निस्तेज और अव्यवहार्य विचारों का अंब जमाना चला गया। आने वाली पीढ़ी इतनी प्रखर बुद्धिवादी हो रही है कि उसे केवल कर्मकाण्ड और अनुपयोगी क्रियाकलापों में बांधकर रखना मुश्किल है। विचारों की जीवन में उपयोगिता हो उसी के साथ

क्रियाशीलता का भी आदर्श सामने हो तब कहीं जाकर आज का प्रबुद्ध वर्ग आर्यसमाज की ओर आकर्षित हो सकता है। आज का नौजवान हर कार्य का परिणाम चाहता है। भूतकाल की भूलभलैया में वह भटकना नहीं चाहता। यदि कथाकारों की तरह भक्तों की भावनाओं का शोषण करने में स्वयं को धन्य समझेंगे तो आर्यसमाज एक माला जपने वाली संस्था बन करके रह जाएगा। भविष्य के उज्ज्वल भवन को यदि खड़ा करना है तो आगे बढ़कर समाज हित में अग्रसर हो जाओ, राष्ट्र और मानवता के लिए कुछ करो भाषणबाजी की जगह क्रियाशीलता को स्थानापन्न करो तब कहीं जीवन की नव चेतना संचरित होती दिखाई देगी। इस तरह कब तक इतिहास के पन्नों को केवल पढ़-पढ़ कर जिन्दा रहोगे? अपना इतिहास स्वयं रचो तब ही आर्यसमाज की विचारधारा पल्लवित होती दिखाई देगी।

- चरित्र निर्माण मण्डल, सैनी, मोहल्ला,
ग्राम-शाहबाद, मोहम्मदपुर, नई दिल्ली-61,
मो. 9871644195

लाजवाब है दयानन्द

क्रांति के विचारों की आग है दयानन्द
ज्ञान के प्रकाश का चिराग है दयानन्द
परोपकारी सदाचारी बेदाग है दयानन्द
स्पष्ट व सत्य वक्ता बेलाग है दयानन्द
प्रेम दया व आनन्द का राग है दयानन्द
तप, साधना, यज्ञ, योग बैराग है दयानन्द
विद्वान सहनशील अनूठा त्याग है दयानन्द
दिमाग बदल डाले ऐसा दिमाग है दयानन्द
त्रेदवाद का तीर्थ पवित्र प्रयाग है दयानन्द
मानव समाज के मिटाता सब दाग है दयानन्द
कुचलता जात-पात का नाग है दयानन्द
नारी को दिलाता बराबर भाग है दयानन्द
पढ़ के देख लो खुली किताब है दयानन्द
कोई भी नकाब नहीं बेनकाब है दयानन्द
जवाब नहीं जिसका वो लाजवाब है दयानन्द
आजाद सुनहरे भविष्य का ख्वाब है दयानन्द

देश का 13वां राज्य उत्तर प्रदेश (भाग-2)

- इन्द्र देव, संस्थापक

21. सपा के शासनकाल में मुस्लिम पीड़ितों को बिना मांगे धनराशि लगभग ढेढ़ गुनी मिल जाती है जबकि हिन्दू पीड़ितों को कोशिश करने पर सामान्य राशि ही मिलती है। पीड़ितों में भी धर्म के आधार पर घोर निन्दनीय कार्य अपराध के समान है।
22. मुस्लिम डी.एस.पी. के परिवार को पचास लाख रूपए दादरी कांड के परिवार जनों को पैतालीस लाख रूपए दिए गए जबकि हिन्दू परिवार को पच्चीस लाख रूपये मिले। सामान्यतः 10-20 लाख ही दिए जाते हैं।
23. मुस्लिम छात्राओं को तीस 2 हजार रूपए नकद दिए गए। मो. आजम खां ने विधान सभा में बताया कि यह राशि देने का वायदा चुनाव घोषणा पत्र में किया गया था जिसका विरोध हिन्दू सदस्यों नेताओं ने भी नहीं किया।
24. राज्य में उर्दू को द्वितीय राजभाषा का दर्जा दिया गया जिसको विरोध में हिन्दी साहित्य सम्मेलन सर्वोच्च न्यायालय तक लड़ा लेकिन वह मुकदमे में हार गया।
25. राज्य के 42 विश्वविद्यालयों में 20 में तो हिन्दी विभाग ही नहीं है।
26. आगरा में केन्द्रीय हिन्दी संस्थान तो है लेकिन वह सक्रिय नहीं है।
27. 21 जिलों को 27 प्रतिशत जन संख्या के आधार पर कांग्रेस ने मुस्लिम बहुल घोषित किया था जिसका किसी ने भी विरोध नहीं किया।
28. 10 दिसम्बर 2015 को मुख्यमन्त्री ने घोषणा की है कि पश्चिमी उत्तर प्रदेश में इलाहाबाद उच्च न्यायालय की खण्डपीठ नहीं खुलेगी जबकि वकील 25-30 सालों से लगातार प्रयास कर रहे हैं जबकि वादी तटस्थ हैं।
29. अब मुस्लिम प्रयास कर रहे हैं कि सहारनपुर या सम्भल में एक और विश्वविद्यालय खुल जाए।
30. लखनऊ में इलाहाबाद उच्च न्यायालय की खण्डपीठ है।
31. इलाहाबाद का हाईस्कूल व इन्टरमीडिएट शिक्षा बोर्ड विश्व का सबसे बड़ा शिक्षा बोर्ड है। अब परीक्षार्थियों की संख्या 50-60 लाख हो जाती है। माध्यम हिन्दी है अब बोर्ड अंग्रेजी माध्यम से भी परीक्षा लेने की तैयारी कर रहा है।
32. दूरदर्शन पर कुछ सप्ताह पूर्व दिखाया गया था कि पूर्वी उत्तर प्रदेश के एक साल में प्रगतिशील किसानों ने आधुनिक साधनों से सब्जी उगानी शुरू की है जिसमें उन्हें अभूत पूर्व सफलता मिली है। उनकी सब्जी 5-7 लाख रूपयों की रोज बिक जाती है। किसानों को हमारी बधाई। प्रदेश के अन्य किसानों को भी उनका अनुकरण करके लाभ उठाना चाहिए।
33. वृन्दावन के दो प्रसिद्ध मन्दिरों का राज्य सरकार अधिग्रहण करने वाली है जिसका प्रबल विरोध किया जा रहा है। यह अधिग्रहण नेहरू द्वारा 1951 में बनाए गए "द हिन्दू रिलीजियस एण्ड चैरिटेबल ऐडोमैन्ट ऐक्ट" के आधार पर किया गया जाएगा। नेहरू ने मस्जिद, चर्च, गुरुद्वारा को अधिग्रहण करने के लिए एक्ट बनाने के हिम्मत नहीं दिखाई लेकिन मुर्दा हिन्दू ने नेहरू का कानून अस्वीकार नहीं किया।
34. काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की यदि मोदी सरकार 5-10 शाखएं खुलवा देती है तो यह विश्वविद्यालय देश का सबसे बड़ा विश्व विश्वविद्यालय फिर से बन जाएगा अन्यथा इसका स्थान दूसरा रहेगा।
35. राज्य में स्थापना दिवस मनाने का सुझाव राज्यपाल ने दिया था जिसे मुख्यमन्त्री ने पसन्द नहीं किया। (स्थापना दिवस 24 मई)
36. लोकदल का प्रभाव कहीं-कहीं है। इसे चरणसिंह ने बनाया था। वे वंशवाद के विरोधी तो थे लेकिन लोक दल का अध्यक्ष अजीत सिंह को अमेरिका से बुलवाकर अपने बेटे को ही बनवाया। कथनी और करनी में अंतर क्यों?

37. वीर सावरकर से प्रभावित होकर बिशन चन्द्र सेठ और महन्त दिग्विजय नाथ हिन्दू महासभा में शामिल हुए। सेठ जी एटा और फर्रुखाबाद से दो बार सांसद चुने गए। महन्त दिग्विजय नाथ और उनके शिष्य अवैद्यनाथ गोरखपुर से सांसद चुने गए। कभी-कभी एक या दो विधायक भी बने।
38. अब हिन्दू महासभा में कोई प्रभावशाली नेता नहीं है जिसके कारण राज्य में कई नेता स्वयं को प्रदेशाध्यक्ष कहते हैं।

39. कमलेश तिवारी ने कई प्रत्याशी खड़े किए थे। दिसम्बर में उन्हें जेल भेज दिया गया और उन पर रासुका लगा दी गई है। उनके वक्तव्य को मुस्लिमों ने कतई पसन्द नहीं किया था।
40. अयोध्या, मथुरा, वाराणासी में औरंगजेब ने मन्दिर भ्रष्ट करके मस्जिदें बनवा दी थी। हिन्दूवादी मस्जिदें हटवाना चाहते हैं जबकि स्थानीय निवासी मौन और तटस्थता का भाव रखते हैं।

- सावरकरवाद प्रचार सभा, बुलन्दशहर,
मो. 08958778443, 09634735929

वाणी का सदुपयोग

महाभारत में वेदव्यास ऋषि ने वाणी की शक्ति को बहुत अच्छे ढंग से समझाया है। उन्होंने बताया कि एक बार दाँत और जीभ में लड़ाई हो गई। क्योंकि एक दाँत में दर्द हो रहा था और जीभ बार-बार उसे छेड़ती जा रही थी। उसका हाल पूछने के लिए उसे बार-बार हिला रही थी। आपने भी यह देखा होगा कि यदि दाँत में दर्द हो या कुछ फंस गया हो तो जीभ को कितनी बार भी समझाओं कि उधर नहीं जाना, लेकिन फिर भी वह थोड़ी-थोड़ी देर में उसे छेड़ कर जरूर आती है। तो जिस दाँत में दर्द था, उस दाँत ने सब दाँतों से शिकायत की, भाई जीभ बहुत परेशान कर रही है। आप सब मिलकर कुछ करो। दाँतों में आपस में संगठन था, सब दाँत आपस में मिलकर जीभ को डराने लगे कि “जब हम सब मिलकर तुमको काटेंगे तो तुम क्या करोगी? हमारा तो काम ही काटने का है। हममें से कुछ दाँत कुचलने वाले हैं, कुछ चुभने वाले, कुछ चबाने वाले हैं। हम एक नहीं बत्तीस हैं और तुम तो अकेली हो, हमेशा हमारे बीच घिरी रहती हो क्यों हमसे झगड़ा मोल लेती हो?” लेकिन, इतना सुनने के बाद भी जीभ घबराई नहीं उसने जबाब दिया-‘जानते हो मैं क्या करूँगी? सिर्फ एक कड़वा वचन बोलूँगी तो तुम बत्तीस के बत्तीस

बाहर आ जाओगे क्योंकि यदि मैं किसी को गाली दे दूंगी तो वह एक घूसा मारेगा और सारे दाँत बाहर आ जायेंगे। इसलिए मुझसे लड़ाई मोल मत लो। दुनिया में जितने भी खून-खराबे हुए उनके पीछे मैं ही हूँ। भाई-भाई को अलग करने के पीछे भी मैं ही हूँ।

लेकिन हमारे शत्रु हमें यह भी समझाते हैं कि वाणी में ही वह शक्ति भी है जो बिछुड़े हुए को मिलाती है सोते हुए को जगाती भी है। अपने वाणी को वश में रखना हमारे हाथ में है। इसलिए भगवान् ने जो वाणी दी है इसमें सरस्वती को बैठाइये। इसमें पवित्रता हो, मधुरता हो, कांटे बिल्कुल नहीं होने चाहिये। बोलते समय इस बात का ध्यान रखें कि किसी को कड़वा न बोले, किसी को तड़पने न दें, हमारी भाषा व्यांगात्मक न हो। वाणी मधुर होने के साथ-साथ शांतिदायक होनी चाहिए। इसलिए जब भी बोलो तो हृदय का प्रेम और मस्तिष्क की बुद्धिमत्ता और समझदारी दोनों का मेल मिलाकर बोलना चाहिए। अन्यथा इस वाणी के द्वारा यदि तुम संसार भर में कांटे बिखेरते रहोगे, वे दूसरों के मार्ग में तो होंगे लेकिन तुम्हारे मार्ग में भी होंगे। इसलिए सबसे बड़ी साधना यही है कि अपनी वाणी को संभाल कर चलो।

- सत्यानन्द जी आर्य

आश्रम द्वारा संचालित विविध प्रकल्पों हेतु 500/- से अधिक प्राप्त दान सूची

श्रीमती रीटा चड्ढा व रवीन्द्र चड्ढा राजौरी गार्डन, दिल्ली	12000/-	श्रीमती रूकमेश आर्या पत्नी श्री सुकर्मपाल जी सै-6, बहा	500/-
आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मन्दिर मार्ग नई दिल्ली	11000/-	श्री अमर सिंह वर्मा जी सोहना	500/-
श्री मंजीत शर्मा लाईनपार, बहादुरगढ़	5100/-	श्री सुरेश शर्मा जी सोहना	500/-
श्री आनन्द कुमार गुप्ता शालीमार बाग, दिल्ली	5000/-	श्री विनीत गम्भीर आर्य समाज, सै-4+7, अर्बन स्टेट, गुडगांव	500/-
श्रीमती कृष्णा झाम जी हेरिटेज सिटी गुडगांव हरियाणा	5000/-	श्री नरवीर लाल चौधरी, गुडगांव, हरियाणा	500/-
श्रीमती सविता लाम्बा सुभाष, नगर, दिल्ली	5000/-	श्री सुभाष दीवान गुडगांव, हरियाणा	500/-
श्रीमती कृष्णा कुमार रखेजा जी गुडगांव हरियाणा	3100/-	श्री अनिल आहुजा, गुडगांव	500/-
चौ. मांगेराम जी आर्य ग्राम खरमाण झज्जर, हरियाणा	3000/-	श्री अतुल आर्य, गुडगांव, हरियाणा	500/-
श्री मुकेश जी सुपुत्र श्री भीम सिंह, सैक्टर-6, बहादुरगढ़	2400/-	श्री आर.के. जुनेजा, गुडगांव	500/-
दीवान सिंह जी राठी विशाल इलैक्ट्रिकबर्कस दिल्ली रोड, बहा.	1100/-	श्री नरेन्द्र वारून, गुडगांव	500/-
श्री सुरेश गुप्ता (बाबा हरिदास हाईलस) बहादुरगढ़	1100/-	श्री सुभाष उरेजा, गुडगांव	500/-
श्री सत्य प्रकाश वशिष्ठ जी शक्तिनगर, बहादुरगढ़	1100/-	श्री गंगाधर आर्य गुडगांव, हरियाणा	500/-
श्री आयुष्मान वंश सुपुत्र श्री सोनू गुरुनानक कॉलोनी, बहा.	1100/-	श्री प्रताप आर्य गुडगांव, हरियाणा	500/-
श्री गणेशदास गरिमा गोयल, दिल्ली	1100/-	श्री दीपा धोंगड़ा, गुडगांव, हरियाणा	500/-
राम सिंह जी पटवारी सुपुत्र श्री राज सिंह दहिया टीकर कॉलोनी	1100/-	श्री ईश्वर देवी टूटेजा, गुडगांव, हरियाणा	500/-
श्रीमती लक्ष्मी देवी पाहुजा एवं सुदर्शन सुखेजा गुडगांव, हरि.	1100/-		
श्रीमती लक्ष्मी आहुजा जी गुडगांव हरियाणा	1100/-		
श्रीमती निर्मला सलूजा गुडगांव, हरियाणा	1100/-		
श्री देवेन्द्र कुमार धनखड़ सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1001/-		
महिमा, रविश सुपुत्री श्री राजीव सचदेवा पश्चिम विहार, दि.	1000/-		
श्री संजय महेन्द्र सुपुत्र श्री चिमन लाल महेन्द्र	1000/-		
मेघाली सुपुत्र श्री बिजेन्द्र शर्मा जी बराही रोड, बहादुरगढ़	1000/-		
श्री शशि गुलाटी, गुडगांव, हरियाणा	1000/-		
श्री सुरजभान आर्य ग्राम डावला, जिला-झज्जर, हरियाणा	511/-		
प. जयभगवान जी, झज्जर हरियाणा	510/-		
मा. करतार सिंह जी आर्य टीकरी कलां, दिल्ली	505/-		
डॉ. कान्ता जी शर्मा दयानन्द नगर, बहादुरगढ़	501/-		
श्री लोकेश जी पांचाल सु. श्री रमेश चन्द्र पांचाल नेहरू पार्क बहा.	501/-		
श्रीमती मायावती मदान धर्मपुरा, बहादुरगढ़	500/-		
श्रीमती विमला सिंघल वैदिक वृद्धाश्रम, बहादुरगढ़	500/-		
श्री मुनीन्द्र खत्री सांपला	500/-		
श्री धर्मवीर सिंह जून गुरुनानक कॉलोनी, बहादुरगढ़	500/-		
श्री कृष्णदेव आर्य गुरुकुल झज्जर	500/-		
श्री राजकरण जी मन्त्री, आर्य समाज मन्दिर, बादली	500/-		
श्री राजेश जी आर्य, सैक्टर-6, बहादुरगढ़	500/-		
श्री ओमप्रकाश आर्य सोहना, जिला-गुडगांव, हरियाणा	500/-		

विविध वस्तुएं

श्री जे.के. अग्रवाल एम.आई.ई बहादुरगढ़	600 रूपये, 30 किलो साबुन
श्री देवेन्द्र कुमार धनखड़ सैक्टर-6, बहादुरगढ़	75 किलो गोहूँ
श्री रामकुमार जी गुडगांव	15 कम्बल
श्री शुक्ला जी नैनपाल मन्दिर टीकरी कलां दिल्ली	1 टीन सरसो तेल
श्री दीपेन्द्र जी सुपुत्र श्री भूप सिंह डबास शनि मन्दिर, टीकरी कलां, दि.	1 टीन सरसो तेल
श्री गुरमान सिंह शेखावत छिकारा कॉलोनी बहादुरगढ़	
आटा चावल 10 किलो, बूरा 2 किलो, दाल 2 किलो	
बिहारी लाल राजेन्द्र प्रसाद अनाजमण्डी, बहादुरगढ़	50 किलो चावल
श्री धर्मवीर जी आर्य एम.आर. ट्रेडिंग कम्पनी, नरेला मण्डी, दिल्ली	
	1 क्विंटल चावल
पूरी ऑयल मील, बहादुरगढ़	1 टीन रिफाईन्ड
फरिश्ता सॉप एण्ड चरखा कैमिकल्य प्रा. लि. पंजाबी बाग, दिल्ली	
	200/- रूपये, एक पेटी वाशिंग पाउडर
	विशिष्ट भोजन
श्री राजपाल जी मलिक सैक्टर-9, बहादुरगढ़	1 समय का विशिष्ट भोजन
श्रीमती सुदेश जी पत्नी श्री सतीश सन्दूजा धर्मपुरा, बहादुरगढ़	
	1 समय का विशिष्ट भोजन
श्री जयभगवान जून गुरुनानक कॉलोनी बहा.	1 समय का विशिष्ट भोजन

गौशाला हेतु प्राप्त दान

श्री सुरेन्द्र सिंह जून सैक्टर-6, बहादुरगढ़	3000/-
श्री शत्रुजीत शर्मा दयानन्द नगर, बहादुरगढ़	2100/-
श्री रमन अबरोल जी पश्चिम विहार, दिल्ली	500/-
श्री जगदीश आर्य (ललिता रानी) जैकमपुरा, गुडगांव	501/-
श्री वंश सुपुत्र श्री आनन्दपाल दराल टीकरी कलां, दिल्ली	501/-
श्री सरूप सिंह आर्य छावला, नई दिल्ली	500/-
श्रीमती मायादेवी दयानन्द नगर, बहादुरगढ़	501/-
श्री बिजेन्द्र राठी, सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1100/-
मा. हरिसिंह दहिया अध्यापक कॉलोनी, बहादुरगढ़	500/-
श्री बिरेन्द्र सिंह आर्य दौलताबाद गुडगांव, हरि.	500/-
श्री नवीन वाही जी दिल्ली	5100/-
श्री नरेश जी लाकड़ा धन्ना बिल्डर्स मुंडका, दिल्ली	1100/-
श्री रामकुमार जी नीलवाल दिल्ली	500/-
श्रीमती शर्बती देवी पत्नी चिरंजीलाल विवेकानन्द, बहा.	3100/-

**श्री चन्द्रभान चौधरी (पूर्व डी.सी.पी.)
द्वारा एकत्रित दान राशि**



श्रीमती चन्द्र कला जी राजपाल, पश्चिम विहार, दिल्ली	500/-
श्रीमती सुभाषी आर्या जी पश्चिम विहार, नई दिल्ली	250/-
डॉ. पुष्पलता जी वर्मा, विकासपुरी, नई दिल्ली	150/-
श्रीमती प्रवीन मेहन्दीरता जी विकासपुरी, नई दिल्ली	150/-
श्री एच.पी. खंडेलवाल जी, विकासपुरी नई दिल्ली	100/-
श्री सेठी परिवार विकासपुरी, नई दिल्ली	100/-
फर्रुखनगर आश्रम के लिए	
श्रीमती चन्द्रकला जी राजपाल पश्चिम विहार, नई दिल्ली	500/-
श्रीमती सुभाषी आर्या जी पश्चिम विहार, नई दिल्ली	500/-

सुभाषित

1. सभी शरीर नाशवान हैं, सभी धन-सम्पत्तियां चलायमान हैं और मृत्यु निकट है। ऐसे में मनुष्य को सदैव धर्म का संचय करना चाहिए।
2. दान देने का स्वभाव, मधुरवाणी, धैर्य और उचित की पहचान, ये चार बातें अभ्यास से नहीं आती, ये मनुष्य के स्वाभाविक गुण हैं।
3. शान्ति के बराबर दूसरा तप नहीं है, संतोष से बढ़कर कोई सुख नहीं है, लालच से बड़ा कोई रोग नहीं है और दया से बड़ा कोई धर्म नहीं है।
4. कमाए हुए धन का दान करते रहना ही उसकी रक्षा है जैसे तालाब के पानी को बहते रहना उत्तम है।
5. वृद्धजन की सेवा ही विनय का आधार है।
6. जो अपने कर्तव्य से बचते हैं, वे अपने आश्रित परिजनों का भरण-पोषण नहीं कर पाते।
7. स्वार्थी व्यक्ति को कभी कोई अच्छी दृष्टि से नहीं देखता लेकिन जो व्यक्ति दूसरों के हित के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित कर देता है, उसकी लोग पूजा करते हैं। स्वार्थी व्यक्ति कभी दूसरे का हित नहीं सोच सकता।
8. सुख सपना, दुःख बुलबुला, दोनों हैं मेहमान उसको आदर दीजिए जो भेजे भगवान।
9. तुरन्त कहा गया 'धन्यवाद' एक सप्ताह बाद भेजे गए 2 पृष्ठ के कृतज्ञता पत्र से कहीं अधिक प्रभावी होता है।
10. सर्वस्व त्यागी वह है जो दूसरों के अवगुण को नहीं देखते हैं।

- हरिशंकर आर्य, आश्रम बहादुरगढ़

मुद्रक व प्रकाशक : स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी', सम्पादक एवं मुख्याधिष्ठाता-आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला-झज्जर (हरियाणा), पिन-124507 द्वारा मर्यंक प्रिन्टर्स, 2199/64, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-110005, दूरभाष-41548503, चलभाष-9810580474 से मुद्रित, आत्म-शुद्धि-पथ कार्यालय-आत्मशुद्धि आश्रम से 15 अप्रैल 2016 को प्रकाशित एवं प्रसारित।

आश्रम में बृहद् यज्ञ एवं ध्यान योग शिविर की झलकियां



मा. हरि सिंह दाहिया जी को सम्मानित करते हुए



श्रीमती कृष्णा आर्या एवम् श्री कृष्ण आर्य जी को सम्मानित करते हुए



कर्नल राजेन्द्र सहस्रवत एवं श्रीमती सावित्री देवी को सम्मानित करते हुए



स्वामी देवव्रत सरस्वती अथर्ववेदीय बृहदयज्ञ पर प्रवचन करते हुए।



यज्ञ करते हुए श्रीमती कृष्णा आर्या एवम् श्री कृष्ण आर्य जी, गुड़गांव



स्वामी धर्मशुनि जी अथर्ववेदीय बृहदयज्ञ पर प्रवचन करते हुए।



यज्ञ करते हुए श्रीमती राज एवम् श्री पुरुषार्थ मुनि, आश्रम



प्रवचन सुनते हुए माताएँ एवम् आश्रम के छात्र

आत्म - शुद्धि - पथ मासिक

अप्रैल 2016

छपी पुस्तक - पत्रिका

एच.ए.आर.एच.आई.एन/2003/9646

पंजीकरण संख्या पी/रोहतक-035/2015-17

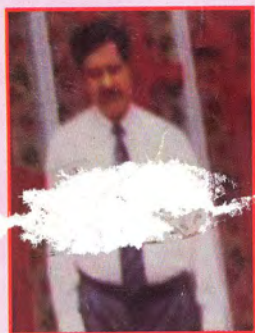
प्रेषक - आत्मशुद्धि आश्रम

बहादुरगढ़, झज्जर (हरियाणा)-124507

सेवा में -

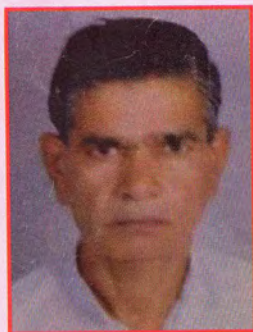
आत्मशुद्धि-पथ के नये आजीवन सदस्य बनें

916



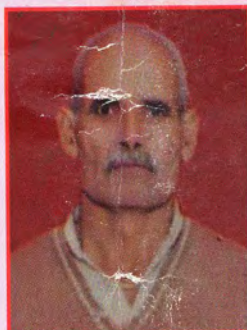
प्रिं. राजदीप जी कुलश्रेष्ठ
डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल,
सैक्टर-6, बहादुरगढ़

919



श्री बलराज जी दहिया
टीचर कॉलोनी,
बहादुरगढ़

917



श्री हरिराम जी आर्य
सुपुत्र श्री श्रीचन्द
गांव-लडरावण, हरियाणा

920



डॉ. मनोज जी आर्य
धनौरा, टीकरी,
बागवत, उत्तर प्रदेश

918



श्री बिजेन्द्र जी पाराशर
बराही रोड, नेहरू पार्क
बहादुरगढ़

921



श्री दिनेश जी बजाज
सैक्टर-15, गुडगांव
हरियाणा